आज फूलों में ताज़गी कम है

(हफ़ीज़ बनारसी की ग़ज़लें देवनागरी लिपि के पाठकों के लिये)

'हफ़ीज़' बनारसी

संकलन और अनुवाद

डॉ.ओबैदुर रहमान

प्रस्तुति

रमेश 'कँवल'

Anybook

Published By

Anybook

Cell : 9971698930

E-mail : contactanybook@gmail.com

Website : www.anybookpublications.com

Price in India : 225/- INR

First published by Anybook in 2023

Publishing Rights © 2023 Anybook

Copyright © 2023 Sahla Obaid

Printed and bound in India

Cover Design by Anybook

Typesetting by Mohammad Ikram

Presented by Bazme-Hafeez Banarasi, Patna

ISBN : 978-93-91571-52-8

The author asserts the moral right to be identified as the author of this work

All rights reserved.

No part of this publication may be reproduced or transmitted in any form or by means, electronic or mechanical and including photocopying, recording or by any information storage and stored in retrieval system, without the prior permission in writing of the Publisher and Author, nor be otherwise circulated in any form of binding or cover other than that in which it is published and without a similar condition including this condition being imposed on the subsequent purchaser.

समर्पण

देवनागरी लिपि में
ग़ज़लों का रसास्वादन करने वाले
ग़ज़ल प्रेमियों के नाम

सहला ओबैद

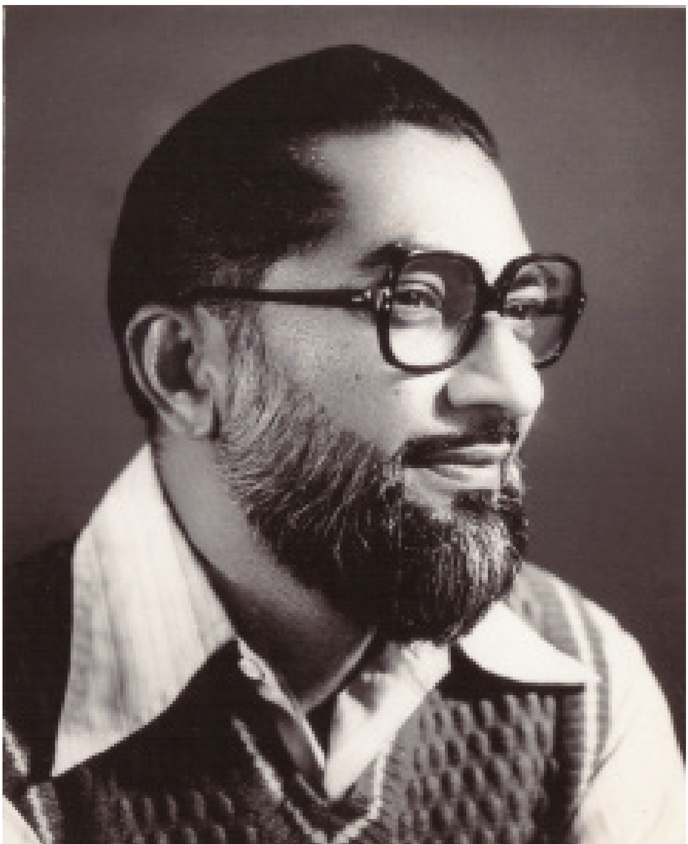

हफ़ीज़ बनारसी : एक परिचय

नाम	: मुहम्मद अब्दुल हफ़ीज़
उपनाम/तख़ल्लुस	: हफ़ीज़
अवतरण (जन्म तिथि)	: 20 मई, 1933
अवतरण स्थल (जन्म स्थान)	: मदनपुरा, बनारस
अवसान (मृत्यु)	: सोमवार, 16 जून, 2008 सुबह 7 बजे
अवसान स्थल	: मुहल्ला बाज़ार सदानंद, मदनपुरा, बनारस
शरीक-ए-हयात	: श्रीमती सालेहा ख़ातून (मरहूमा)

संतान (औलाद) :

1. नाम : डॉ. अख्तर मसूद
प्रोफ़ेशन : चिकित्सक
शौक़ : शायरी, अफ़सानानिगारी, समाज सेवा
शरीक-ए-ज़िन्दगी : मोहतरमा डॉ. अतिया बानो
प्रोफ़ेशन : चिकित्सक

2 नाम : ज़फ़र महमूद ज़फ़र
प्रोफ़ेशन : हेड-मेडिकल रिकॉर्ड्स डिपार्टमेंट, ग्रीन क्रेसेंट हॉस्पिटल, रियाद, सऊदी अरब
शौक़ : शायरी
शरीक-ए-ज़िन्दगी : मोहतरमा रिज़वाना नसरीन
प्रोफ़ेशन : शिक्षक

3 नाम : डॉ. अब्दुर रहमान
प्रोफ़ेशन : चिकित्सक, बनारस
शरीक-ए-ज़िन्दगी : मोहतरमा फ़ातिमा नाहीद
प्रोफ़ेशन : शिक्षक

4 नाम : डॉ.अब्दुल क़ादिर

प्रोफ़ेशन : सहायक प्रोफ़ेसर, मानव संसाधन विभाग, जयपुरिया इंस्टिट्यूट ऑफ़ मैनेजमेंट, नोयडा

शरीक-ए-ज़िन्दगी : सना अफ़ज़ाल, एम.एस.सी. (न्यूट्रिशनल साइंस)

प्रोफ़ेशन : Nutritionist

5 नाम : मोहतरमा सहला ओबैद (बेटी), एम.ए., गृहणी

पति : स्व. डॉ. ओबैदुर रहमान

प्रोफ़ेशन : वैज्ञानिक, शायर, अदीब

(संपादक, इंडियन जर्नल ऑफ़ एग्रीकल्चरल साइंसेज, आई. सी. ए. आर., पूसा, कृषि मंत्रालय से सम्बद्ध)

6 नाम : डॉ. साजदा सानी

प्रोफ़ेशन : चिकित्सक, इलाहबाद

पति : डॉ. नूरुद्दीन

प्रोफ़ेशन : चिकित्सक

अदबी ख़िदमात : गुलदस्ता -ए-दुआ : 1968 (उर्दू)

दरख़्शाँ (ग़ज़लें,नज्में, क़तआत) :1969 (उर्दू)

बादा-ए-इर्फ़ां (हमदिया-व-नातिया कलाम) : 1974 (उर्दू)

क़ौल ओ क़सम (क़ौमी और वतनी नज़्में) : 1975 (उर्दू)

बंदा -ए-मोमिन : 1981 (उर्दू)

ग़ज़ालाँ (ग़ज़लें) : 1984 (उर्दू)

क़सीदा-ए-नबी-ए-रहमत : 1993 (उर्दू)

सफ़ीर-ए-शहर-ए-दिल (ग़ज़लों और नज़मों की कुल्लियात): 2007(उर्दू)

क्या सुनाएँ हाले-दिल: 2023 (ग़ज़लें-देवनागरी)

जलवा -ए- ईमाँ (हमदिया-व-नातिया कलाम) : ज़ेरे-तरतीब (उर्दू)

फ़रमान-ए-मुस्तफ़ा (अहादीस-ए-नब्वी का रुबाइयात में तर्जुमाँ) ज़ेरे-तरतीब (उर्दू)

संकलन: सहला ओबैद

आधुनिकता को परंपरा का लिबास पहनाने वाला शायर *हफ़ीज़ बनारसी*

अंग्रेज़ी का ज्ञान बाँटने वाले उर्दू के बेहतरीन शायरों का जब ज़िक्र होता है तो ***पं. रघुपति सहाय 'फ़िराक़' गोरखपुरी*** के बाद ***हफ़ीज़ बनारसी*** का नाम बड़े ही मान-सम्मान के साथ लिया जाता है। आपका जन्म गंगा के रमणीक तट पर बसे हिन्दुओं के पवित्र शहर बनारस के मदनपुरा मुहल्ला में 20 मई, 1933 को एक व्यवसायी परिवार में हुआ था। आपके यहाँ बनारसी साड़ियों और कपड़ों का कारोबार बड़े पैमाने पर होता था। लेकिन आपके घर और मुहल्ला का माहौल दीनी और मज़हबी था। हाजी अब्दुल अज़ीज़ के पुत्र अलहाज कारी अब्दुल क़यूम के चौथे पुत्र के रूप में ***मोहम्मद अब्दुल हफ़ीज़*** का जन्म हुआ। अपने वालिद के दीनी और धार्मिक संस्कारों की छाप हफ़ीज़ पर बचपन के 12 वर्षों (पिता के स्वर्गवास) तक निरंतर पड़ती रही। उनके घर पर आज़ादी की लड़ाई से जुड़े लोगों का गोपनीय जमावड़ा लगता रहता था जिस से वे देश-प्रेम और राष्ट्रीयता की भावना से ओत-प्रोत होते रहे। देश और देश प्रेम का जोश और उन्माद उनकी देशभक्ति की रचनाओं के संकलन क़ौलो-क़स्म में उजागर होता है। आप की रूचि शुरू से ही व्यवसाय में कम शिक्षा में ज़्यादा थी। जामिया इस्लामिया और मदरसा रहमानिया से उर्दू और फ़ारसी की बुनियादी तालीम के बाद आपने जय नारायण स्कूल, बनारस, यू.पी.बोर्ड से हाई स्कूल (1949), गवर्नमेंट क्वींस कॉलेज से आई.ए. (अरबी के साथ), बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी से बी.ए. (1953), अंग्रेज़ी में एम.ए.(1955) और बी.एड.(1956) की शिक्षा दीक्षा प्राप्त कर कुछ दिनों के लिए मुस्लिम कॉलेज, मऊ नाथ भंजन और अगस्त 1957 में महाराजा कॉलेज, आरा में लेक्चरर बन गए। आरा ही उनका वतन-ए-सानी रहा जहाँ से वे वर्ष 1995 में अंग्रेज़ी के विभागाध्यक्ष की हैसियत से सेवा निवृत हुए। सेवानिवृति के बाद वे बनारस में रहने लगे जहाँ 16 जून, 2008 को चलते फिरते उनका निधन हुआ।

विद्यार्थी जीवन से ही उनकी रचनाएँ विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में छपने लगीं। रोज़नामा क़ौमी आवाज़, लखनऊ, रोज़नामा अलजमीयत, दिल्ली, रियासत देहली (संपादक : *दीवान सिंह मफ़तूं*), माहनामा कारवाँ (संपादक : *प्रो.एजाज़ हुसैन*, अध्यक्ष उर्दू विभाग, इलाहाबाद यूनिवर्सिटी) में वे प्रकाशित होते रहे।

1953 में आजकल (संपादक : *शब्बीर हसन जोश मलीहाबादी*) के शेरो-शायरी अंक में, जिसमें हिंदुस्तान की 14 भाषाओं की चुनिन्दा रचनाएँ शामिल थीं,

हफ़ीज़ बनारसी की ग़ज़ल प्रकाशित हुई।

देश की आज़ादी के साल जब वे हाई स्कूल के विद्यार्थी थे उन्होंने बज़्मे-अदब, बनारस के मुशायरे में अपनी ग़ज़ल सुनाई थी। फिर तो वे मुशायरों के मक़बूल शायर हो गए। अपनी दिलकश आवाज़ और दिल को छू लेने वाली शायरी के बदौलत उन्हें मुल्क के सभी कामयाब मुशायरों में बुलाया जाने लगा। उनकी शोहरत की धूप शारजाह, दुबई, जद्दा, सऊदी अरब, पाकिस्तान एवं उर्दू अदब से आशना अन्य मुल्कों के मुशायरों तक पहुँच गयी। HMV ने उनकी ग़ज़लों की रिकार्डिंग की। you tube पर उनके मुशायरों में ग़ज़लसरा होने के विडियो आज भी महफ़ूज़ हैं।

आरा उनके लिए वतने-सानी (दूसरा घर) बन चुका था। आरा के अदीबों और अदब शनास लोगों का ज़िक्र उन्होंने ख़ूबसूरत अंदाज़ में किया है : *नुसरत आरवी, मौलाना मेहदी बुखारी, मौलाना अज़ीज़ अहमद वकील, मौलाना अब्दुल वहाब आरवी, हज़रत शाह क़तील दानापुरी, शाह फ़ज़ल इमाम वाक़िफ़, ग़ुलाम फख़रुद्दीन शाद* से उनके मरासिम (सम्बन्ध) थे और इन लोगों ने उन्हें मुतास्सिर(प्रभावित) किया है।

हफ़ीज़ बनारसी के हमउम्र हसन आरज़ू, साबिर आरवी, शुएब राही, और ज़हीर नाशाद सुख़नवर रहे। उनसे 3-4 साल पहले धरती पर आने वाले शायरों में मशहूर ओ मारुफ़ नाम अलक़मा शिबली, मज़हर इमाम और वहाब दानिश के रहे। नज़ीर बनारसी से उनके बड़े अच्छे मरासिम रहे। अपने शहरे-विलादत और दोस्तों के नाम का ज़िक्र उन्होंने अपनी रचनाओं में यूँ किया है :

परवरदा-ए-फ़िज़ा-ए-बनारस हूँ मैं हफ़ीज़
मेरी ज़ुबाँ में चाशनी-ए-आब-ए-गंग है
उसी का नाम बनारस है, शहर काशी है
जहाँ हफ़ीज़ का घर है, नज़ीर रहते हैं
सभी से मिलता है और ख़ुशदिली के साथ यहाँ
एजाज़ शख़्स हफ़ीज़-ए-बनारसी है मियाँ

11 जनवरी 1960 को उनकी शादी मोहतरमा ***सालेहा ख़ातून*** से हुई। मारुफ़ फ़नकार डॉ.अलीम मसरूर ने उनकी शादी का सेहरा लिखा जिसका ज़िक्र डॉ.अमृत लाल इशरत ने अपने प्रमुख शोधपरक पुस्तक **'सिलसिला-ए-मुसहफ़ी के**

सुख़नवराने-बनारस' में किया है। लीजिए सेहरा का एक बंद पेश है :

तलब की वुसअते तमाम आज इक नज़र में है
ख़याल का हसीं समाँ वजूदे-मोतबर में है
मुहब्बत आज ज़िन्दगी की ऐसी रहगुज़र में है
जहाँ ये मंज़िल-ए-वफ़ा लिबास-ए-हमसफ़र में है
रुके तो है बहिश्ते-आरज़ू इसी मक़ाम पर
बढ़े क़दम तो जन्नत-ए-वफ़ा है गाम-गाम पर

हफ़ीज़ बनारसी ने भी अपने पहले मजमूआ (काव्य संकलन) दरख़्शाँ में अपनी जीवन संगिनी के नाम 11 बंद की नज़्म 'इब्तदा-ए-सफ़र' लिखी है।

हफ़ीज़ बनारसी के उस्ताद जनाब मुस्लिम उल हरीरी थे जिनका इंतक़ाल 15 फ़रवरी 1983 को हुआ।

अदबी ख़िदमात :

<u>किताब का नाम</u>	<u>प्रकाशन का साल</u>
गुलदस्ता-ए-दुआ	1968 (उर्दू)
दरख़्शाँ (ग़ज़लें, नज़्में, क़तआत)	1969 (उर्दू)
बादा-ए-इरफ़ाँ (हमदीया व नातिया कलाम)	1974 (उर्दू)
क़ौल-ओ-क़सम (क़ौमी और वतनी नज़्में)	1975 (उर्दू)
बंदा-ए-मोमिन	1981 (उर्दू)
ग़ज़ालाँ (ग़ज़लें)	1984 (उर्दू)
क़सीदा-ए-नबी-ए-रहमत	1993 (उर्दू)
सफ़ीर-ए-शहर-ए-दिल (ग़ज़लों, नज़्मों की कुल्लियात)	2007 (उर्दू)
क्या सुनाएँ हाले-दिल: 2023 (ग़ज़लें-देवनागरी)	

इनआम और सम्मान

1	दरख़्शाँ पर बिहार उर्दू अकादमी, पटना का इनआम	1971
2	पत्नी और माँ के साथ हज पर	1974
3	क़ौलो-क़सम पर उत्तर प्रदेश और पश्चिम बंगाल उर्दू अकादमी का इनआम	1975

4 आल इंडिया मीर अकादमी, लखनऊ की तरफ़ से 1981
'इम्तियाज़-ए-मीर' 'अवार्ड'

5 ग़ज़ालाँ पर बिहार उर्दू अकादमी, पटना का इनआम 1986

6 इंडियन सोशल कल्चरल एँड लिटरेरी आर्गेनाईज़ेशन
कोलकाता की तरफ़ से ISCLO अवार्ड 1986

7 मिल्लत सोसाइटी बनारस की तरफ़ से 'शाने-मिल्लत अवार्ड' 1997

8 बनारस का 'काशी रत्न' अवार्ड 2000

9 मदर हलीमा फ़ाउंडेशन बनारस की तरफ़ से 2003
'निगार-ए-बनारस' अवार्ड

रमेश कँवल

नज़रे-हफ़ीज़ बनारसी
डॉ.(प्रो.) अब्दुल मन्नान तरज़ी

शायर जो इक बड़े हैं हफ़ीज़े बनारसी
पेशे-नज़र है आज मेरे उनकी शायरी

लेना है जायज़ा मुझे उनके कलाम का
आइना इक बनाना है फ़न्नी मुक़ाम का

दिल की ज़ुबाँ समझने को है दर्द लाज़िमी
उसके बग़ैर पूरा नहीं होता आदमी

दिल ही का दर्द इल्मो-अदब की है आबरू
फ़न इस से दूर जैसे इबादत है बेवज़ू

ख़ूने-जिगर से सोज़-ए-दरूँ का वजूद है
सोज़-ए-दरूँ के हाथ में हक़ की नमूद है

गर जायज़ा कलाम का लें इस उसूल पर
हर शेर आगही का ख़ज़ाना है मोतबर

पहली किताब शेरे-दरख़्शाँ अगर है दी
फिर दूसरी है बादा-ए-इरफ़ाँ भी इक मिली

हुब्बे-वतन पे नज़्मों का क़ौल-ओ-क़सम है नाम
यकजहती बैन क़ौम का इस में हैं इल्त्ज़ाम

गुलदस्ता-ए-दुआ तो नबी का क़सीदा भी
इक साहिरी-ए-फ़न है ग़ज़ालाँ की शायरी

यानी ग़ज़ल ने पायी है वह रिफ़अते-बयाँ
हर शेर मोतबर है तो हर नक़्श कामराँ

मख़सूस दिल की कैफ़ियत का नाम है ग़ज़ल
सहबा-ए-सद निशात ही का जाम है ग़ज़ल

दश्त-ए-जनूँ की रेत पर तहरीर है ग़ज़ल
गाहे-हरीम-ए-शौक़ की तनवीर है ग़ज़ल

पाती है जिस से रौशनी तारीकी-ए-हयात
पोशीदा हैं ग़ज़ल ही में ऐसी तजल्लियात

डॉ.अब्दुल मन्नान तरज़ी

फ़ेहरिस्त

1. लहू की मय बनाई दिल का पैमाना बना डाला 17
2. जब तसव्वुर में कोई माहजबीं होता है 18
3. मरहूने-फ़स्ले-गुल नहीं इस अंजुमन के फूल 19
4. मुद्दत की तिश्नगी का इनआम चाहता हूँ 20
5. कहते हुए हयात के अफ़साने सो गये 21
6. गुलाब भी नहीं पैकर तिरा कँवल भी नहीं 22
7. बेनियाज़ी दिले-आशिक़ का जो किरदार बने 23
8. रास आई है मिरी वज़'-ए-फ़क़ीराना मुझे 24
9. तारों की बज़्म चाँद की महफ़िल क़रीब है 26
10. पर्दे में तबस्सुम के हर चोट छुपा ली है 27
11. कहीं बज़्मे-माहो-अंजुम कहीं ज़ुल्मतों का डेरा 28
12. अफ़साना-ए-ता'मीर के उन्वान बहुत हैं 29
13. पर्दा-ए-लुत्फ़ में ये मश्क़े-सितम क्या कहिए 30
14. ज़ुल्फ़ को शाम, तो आरिज़ को सहर कहते हैं 32
15. ख़फ़ा है गर ये ख़ुदाई तो फ़िक्र ही क्या है 33
16. ज़िक्रे-जमाले-यार से ज़ुल्मते-हिज्र छँट गई 34
17. आपकी याद आपका ग़म है 35
18. बहार आई है सहने-चमन की बात करो 36
19. कुछ सोच के परवाना महफ़िल में जला होगा 37
20. क्या जानिए कब सहबा साग़र में ढले साक़ी 38
21. दौर आसाँ था मुश्किलात के बाद 39
22. याद आ गया ख़ुदा रुख़े-जानाना देख कर 40
23. किस को हो फ़िक्रे-अलम फ़िक्रे-अलम कौन करे 41
24. पैग़ाम दिया है कभी पैग़ाम लिया है 42

25. रहज़नी राहनुमाई के क़रीब आ पहुँची 43
26. ग़ुंचों का तज़किरा है न गुल-हाए-तर की बात 44
27. जिगर का ख़ून देकर बादा-ए-गुलफ़ाम लेते हैं 45
28. तदबीर के दस्ते-रंगीं से तक़दीर दरख़्शाँ होती है 46
29. दर्दे-दिल याद नहीं दर्दे-जिगर याद नहीं 47
30. रात जितनी तवील होती है 48
31. गुमराह कह के पहले जो मुझसे ख़फ़ा हुए 50
32. जाने क्या बात है काहे का गिला है हम से 51
33. हुस्न से दोस्ती थी बहुत दिन हुए 52
34. वो फ़ुसूने-जलवा-ए-यक नज़र तुम्हें याद हो कि न 54
35. फ़िक्रे-कौसर, न फ़िक्रे-जन्नत है 56
36. इश्क़ में हर नफ़स इबादत है 58
37. कोई बर्क़ थी कि चमक गई, कोई शो'ला था कि 59
38. मुश्किलों का ग़म कैसा सबको ताक़ पर रख दे 60
39. मिरा दिल जिसे न उठा सके तू मुझे वो बारे-गिराँ न दे 62
40. लगा न उसकी अना का सुराग़ रहने दे 64
41. ग़म याद रहेगा, न ख़ुशी याद रहेगी 66
42. अहले-दिल, अहले-वफ़ा, अहले-नज़र होने तक 68
43. कोई बतलाए कि ये तुर्फ़ा तमाशा क्यों है 70
44. हर सुब्ह हदीसे-रुख़े-जानाना कहे है 71
45. रात का नाम सवेरा ही सही 72
46. मुस्कुराते हुए हर ग़म से गुज़र जाएँगे 74
47. ज़ुल्फ़ की शाम न आरिज़ की सहर है लोगो 75
48. किसी मुक़ाम पे ख़त्मे-सफ़र नहीं होता 76
49. मौत से भी कर्ब आगीं इंतज़ार के लम्हे 78
50. किस जगह से गुज़र रहे हैं लोग 79

51. ये और बात कि लहजा उदास रखते हैं	80
52. तुम उन्हें रोकोगे कब तक ये तो अक्सर आएँगे	81
53. वक़्त से पहले ढल गया सूरज	82
54. बहर-जादा नुक़ूशे-ग़ैरफ़ानी छोड़ आए हैं	84
55. जो समझ में नहीं आतीं वो सदाएँ तो हैं	86
56. कम नहीं अक़्लो-ख़िरद का, आगही का ज़ायक़ा	88
57. रूह लरज़ाँ हो गई जिस्मों से कपड़े उड़ गये	90
58. ज़हर उगला करें ये ज़हर उगलने वाले	92
59. तिरे जलवों की अरज़ानी नहीं है	94
60. जब भी तिरी यादों की चलने लगी पुरवाई	96
61. शक्ले-हस्ती है बेजान तस्वीर सी	97
62. उसे पास से हम ने देखा नहीं था	98
63. सफ़ीने का जो नाख़ुदा बन गया है	99
64. रोज़ उभरते रहे रोज़ ढलते रहे	100
65. रेत के मंज़र आँखों में भर जाएँगे	101
66. क़ुर्बतों की शराब देता जा	102
67. दिल की आवाज़ में आवाज़ मिलाते रहिए	103
68. कभी शाख़े-गुले-नाज़ुक, कभी तलवार लगे	104
69. तस्वीर का इक रंगे-दिगर याद करे है	106
70. तग़ाफ़ुल को तर्ज़े-करम जानते हैं	108
71. तेज़ जब ख़ंजरे-बेदाद किया जाएगा	109
72. यूँ तिरे गेसू कभी बरहम न थे	110
73. तू भी रुस्वा है, मिरा दिल भी है बदनाम अभी	112
74. आवारा मिज़ाजी का इल्ज़ाम नहीं लेंगे	113
75. जो ख़त है शिकस्ता है जो अक्स है टूटा है	114
76. जो खो गई वो कहानी तलाश करते हैं	115

77. दिलों को तोड़ के जामे-शराब ढाले हैं 116
78. जोशे-जुनूँ में आबलापाई है ज़िंदगी 117
79. खिलाओ फूल बिखेरो हँसी जिधर जाओ 118
80. वफ़ूर-शौक़ में हाथों से गिर कर टूट जाते हैं 119
81. जल्वा-ए-रक़्से-शरर है ज़िंदगी 120
82. हर एक शब है शबे-इंतज़ार की सूरत 122
83. तेरा हुस्ने-दिलनशीं हो लाख पर्दा आश्ना 123
84. सब हैं महबूबे-कज-अदा की तरह 124
85. निगाहे-शौक़ पे क्यों है तिरा इताब बहुत 125
86. हुस्ने-ख़यालो-दिलकशी-ए-ख़्वाब ले गया 126
87. हर सम्त दिलफ़रेब नज़ारों का जाल था 127
88. अहदे-वफ़ा किया है तिरे नक़्शे-पा के साथ 128
89. निशाने-ज़ीस्त सराबों में देख लेते हैं 129

❁

लहू की मय बनाई दिल का पैमाना बना डाला
जिगर दारों ने मक़तल[1] को भी मयख़ाना बना डाला

हमारे जज़्बा-ए-ता'मीर[2] की कुछ दाद दो यारो
कि हमने बिजलियों को शम-ए-काशाना[3] बना डाला

सितम ढाते हो लेकिन लुत्फ़ का एहसास होता है
इसी अंदाज़ ने दुनिया को दीवाना बना डाला

भरी महफ़िल में हमने बात कर ली थी उन आँखों से
बस इतनी बात का यारों ने अफ़साना बना डाला

मिरे ज़ौक़े-परस्तिश[4] की करिश्मा-साज़ियाँ[5] देखो
कभी काबा कभी काबा को बुतख़ाना बना डाला

शिकायत बिजलियों से है न शिकवा बादे-सरसर[6] से
चमन को ख़ुद चमन वालों ने वीराना बना डाला

चलो अच्छा हुआ दुनिया 'हफ़ीज़' अब दूर है हमसे
मुहब्बत ने हमें दुनिया से बेगाना बना डाला

1.वध स्थल 2.रचना भाव 3.कुटीर का दीप 4.भक्ति प्रवृत्त 5.चमत्कार 6.झंझावात पवन

❁

जब तसव्वुर[1] में कोई माहजबीं होता है
रात होती है मगर दिन का यक़ीं होता है

उफ़ वो बेदाद[2] इनायत[3] भी तसद्दुक़[4] जिस पर
हाए वो ग़म जो मसर्रत से हसीं होता है

हिज्र[5] की रात फ़ुसूँ-कारी-ए-ज़ुल्मत[6] मत पूछ
शम'अ जलती है मगर नूर नहीं होता है

इश्क़ में मारका[7]-ए-क़ल्बो-नज़र क्या कहिए
चोट लगती है कहीं दर्द कहीं होता है

हमने देखे हैं वो आलम भी मुहब्बत में 'हफ़ीज़'
आस्ताँ[8] खुद जहाँ मुश्ताक़े-जबीं[9] होता है

1.कल्पना 2.ज़ुल्म 3.कृपा 4.निछावर 5.विरह 6.अन्धकार की माया 7. प्रतिद्वंदी 8.चौखट 9. उत्सुक मस्तक

❁

मरहूने[1]-फ़स्ले-गुल नहीं इस अंजुमन के फूल
आयी तुम्हारी याद खिले मेरे मन के फूल

ये सब मिलें तो बादाकशी[2] का मज़ा मिले
आँखों के जाम, ज़ुल्फ़ के बादल, दहन के फूल

महताब[3] जलवारेज़[4] है या आस्माँ का दिल
तारे हैं ज़ौ-फ़शाँ[5] कि खिले हैं गगन के फूल

कैसी बहार आई है ऐ बाग़बाँ बता
अफ़सुर्दा[6] किस लिए हैं रियाज़े-वतन[7] के फूल

सीना है मेरा सहने-गुलिस्ताँ[8] बना हुआ
यूँ ज़ख़्मे-दिल महकते हैं जैसे चमन के फूल

क्या और पास है जो तुझे नज़्र कर सके
शाइर की पेशकश हैं ये शे'रो-सुख़न के फूल

ताज़ा रहेगा हश्र[9] तक इनका चमन 'हफ़ीज़'
हैं बेनियाज़े-बादे-ख़िज़ाँ[10] फ़िक्रो-फ़न के फूल

1.बन्धक 2.मधुपान 3.चन्द्रमा 4.प्रकट 5.प्रकाशित 6.मलीन 7.स्वदेश 8.पुष्पोद्यान या पुष्प उद्यान 9.प्रलय 10.पतझड़ की हवा से अप्रिय

मुद्दत की तिश्नगी[1] का इनआम चाहता हूँ
मस्ती भरी नज़र से इक जाम चाहता हूँ

ऐ गर्दिशे-ज़माना ज़हमत तो होगी तुझको
कुछ देर के लिए मैं आराम चाहता हूँ

कल हमसे कह रहा था शुहरत तलब ज़माना
तुम काम चाहते हो मैं नाम चाहता हूँ

सुब्हे-हयात[2] ले ले ऐ ज़ुल्फ़े-यार लेकिन
मैं तुझ से इसके बदले इक शाम चाहता हूँ

बादे-सबा[3] से कह दो मेरी तरफ़ भी आए
मैं भी 'हफ़ीज़' उनका पैग़ाम चाहता हूँ

1.प्यास 2.जीवन प्रातः 3.प्रातःपवन

❁

कहते हुए हयात के अफ़साने सो गये
सब को जगा के आपके दीवाने सो गये

आँखें खुलीं तो जाग उठी सुब्हे-मयकदा[1]
आँखें हुईं जो बंद तो मयख़ाने सो गये

फूलों की सेज पर भी कभी मुज़तरिब[2] रहे
काँटों पे भी कभी तिरे दीवाने सो गये

अब वक़्त है कि बार-गहे-दिल[3] सजाइए
मस्जिद को नींद आई सनमख़ाने[4] सो गये

अब शम'अ नूरबार[5] है किसके लिए 'हफ़ीज़'
जल-जल के सोज़े-हिज्र[6] में परवाने सो गये

1.मधुशाला का प्रातः 2.व्याकुल 3.सभा स्थल /सभागार 4.प्रतिमाशाला 5.प्रकाशित 6.विरह दुख

❀

गुलाब भी नहीं पैकर[1] तिरा कँवल भी नहीं
तिरे जमाल[2] का लेकिन कोई बदल भी नहीं

बला-ए-जाँ भी है उस बुत की सोहबते-रंगीं
सितम तो ये है कि उसके बग़ैर कल भी नहीं

किया है तय कि न बोलेंगे उस सितमगर से
मगर ये फ़ैसला-ए-शौक़ कुछ अटल भी नहीं

तुम्हें भी आई है भूले से उसकी याद कभी
तुम्हारी याद से ग़ाफ़िल जो एक पल भी नहीं

यही नहीं कि हमारा जुनूँ है संजीदा
निगारे-वक़्त[3] की ज़ुल्फ़ों में अब वो बल भी नहीं

'हफ़ीज़' और भी इक ज़िंदगी है इसके बाद
इलाजे-हस्ती-ए-ना-पाएदार[4] अजल[5] भी नहीं

1.शरीर 2.सौन्दर्य 3.समय चित्र 4. अस्थाई जीवन का इलाज 5. मृत्यु

❀

बेनियाज़ी[1] दिले-आशिक़ का जो किरदार बने
हुस्न ख़ुद इश्क़ की बाँहों का तलबगार बने

मंज़िले-दारो-रसन[2] आई तो रूपोश[3] हुए
लोग फिरते थे हक़ीक़त के परस्तार[4] बने

लुट गई आबरू-ए-फ़स्ले-बहाराँ ऐ दोस्त
बुल-हवस[5] जब से गुलिस्ताँ के निगहदार बने

शर्त है जज़्बे-बराहीम का पैदा होना
शोला ज़ार आज भी रश्के-गुलो-गुलज़ार बने

फिर गुलिस्ताँ की हिफ़ाज़त का सवाल उठ्ठा है
फिर हर इक शाख़ को लाज़िम है कि तलवार बने

देखना जुर्म नहीं हाँ मगर इस शर्त के साथ
तेरा अंदाज़े-नज़र हुस्न का मेयार[6] बने

अब्रे-बाराँ[7] भी है साक़ी का इशारा भी 'हफ़ीज़'
कौन ऐसे में तक़द्दुस[8] का गुनहगार बने

1.निष्कामी 2.सूली 3.निहित 4.पूजक 5.लालायित 6.प्रतिमान 7.मेघ 8.पवित्रता

❀

रास आई है मिरी वज़-ए-फ़क़ीराना[1] मुझे
नाज़[2] वाले पेश फ़रमाते हैं नज़राना मुझे

इश्क़ के असरार[3] हैं कुछ कारे-तिफ़लाना[4] नहीं
ख़ुद समझ लेना तो यारो आके समझाना मुझे

अंजुमन की अंजुमन ने अजनबी जाना मुझे
शुक्रिया ऐ चश्मे-साक़ी[5] तूने पहचाना मुझे

रश्क[6] से देखें न क्यों अरबाबे-मयख़ाना[7] मुझे
सबको जामे-मय मिला आँखों का पयमाना मुझे

मेरा अंदाज़े-जुनूँ[8] लेकर न आया फिर कोई
ढूँढ़ती फिरती है अब तक ख़ाके वीराना मुझे

साज़े-ऐशो-नग़्मा-ए-इशरत[9] नहीं मेरी तलब
सोज़[10] ही देना है तो दे सोज़े-परवाना मुझे

मर्हबा[11] ऐ जज़्बा-ए-दिल, शुक्रिया ऐ ज़ब्ते-ग़म
वो सुनाने आए हैं ख़ुद अपना अफ़साना मुझे

इससे बढ़कर का क्या मिलेगा और इनआम-ए-जुनूँ
अब तो वो भी कह रहे हैं अपना दीवाना मुझे

ये करम भी कम नहीं है उस ने देखा तो सही
लुत्फ़ से देखा कि देखा बेनियाज़ाना मुझे

शुक्रिया ऐ हादसाते-ज़िंदगानी शुक्रिया
आ गया शीशे को अब पत्थर से टकराना मुझे

बज़्मे-साक़ी, मौसमे-गुल और ये काली घटा
हज़रते-नासेह[12] कभी फिर आके समझाना मुझे

जाम उठाना भी न आया आज तक जिनको 'हफ़ीज़'
वो सिखाने आए हैं आदाबे-मयख़ाना मुझे

1.भिक्षुक का व्यवहार 2.हाव 3. भेद 4.बच्चे का खेल 5.मंदिरा पिलाने वाले की आँख 6.ईर्ष्या 7.मधुशाला वाले 8.उन्माद 9.ख़ुशी का संगीत 10.दुख 11. धन्य 12. उपदेशक

❀

तारों की बज़्म चाँद की महफ़िल क़रीब है
दो गाम यूँही और कि मंज़िल क़रीब है

मौजों को चीरते हुए बाज़ू-ए-शौक़ से
बढ़ते चलो कि दामने-साहिल क़रीब है

ऐ हक़परस्त जज़्बा-ए-मंसूर कम न हो
बस अब शिकस्ते-लशकरे-बातिल[1] क़रीब है

कब राएगाँ[2] गया है किसी का लहू यहाँ
ऐ किश्ते-आरज़ू[3] तिरा हासिल क़रीब है

राहे-तलब में ख़ाक बसर और कोई दिन
अब वो हरीमे-नाज़[4] वो मुहमिल क़रीब है

1.असत्य सैन्य की हार 2. व्यर्थ 3.इच्छा की खेती 4.प्राचीर

❁

पर्दे में तबस्सुम[1] के हर चोट छुपा ली है
दीवानों ने जीने की क्या राह निकाली है

हर शाम चिराग़ाँ है पल्कों के मुंडेरों पर
अशकों की इनायत से हर रात दिवाली है

क्या तेरा तसर्रुफ़[2] है ऐ साक़ी-ए-मयख़ाना
पैमाना जो ख़ाली था वो आज भी ख़ाली है

दुनिया के ख़ज़ाने में मिलने की नहीं यारो
हमने लबे-ला'लीं से जो चीज़ चुरा ली है

मयख़ाने की हुर्मत[3] पर अब आँच न आएगी
साग़र[4] की जगह हमने शमशीर उठा ली है

ज़ुल्मत के परस्तारो सामाने-सफ़र बाँधो
पेशानी-ए-मश्रिक़[5] से पौ फूटने वाली है

क्या जाने 'हफ़ीज़' उसको कब इसकी ज़रूरत हो
वाइज़[6] के लिए हमने थोड़ी सी बचा ली है

1.मुस्कान 2.अधिकार 3.मर्यादा 4.मध पात्र 5.पूर्व दिशा 6. उपदेशक

❀

कहीं बज़्मे-माहो-अंजुम[1] कहीं ज़ुल्मतों का डेरा
अभी ख़ूने-दिल जलाओ अभी दूर है सवेरा

सू[2]-ए-बुतकदा गया मैं तो हरम[3] ने पाँव पकड़े
मैं चला हरम की जानिब तो सनमकदों ने घेरा

तिरी ज़ुल्फ़ के तसव्वुर ने अजीब गुल खिलाए
वो शमीमे-कैफ़[4] फैली कि महक उठा अँधेरा

वो मक़ाम आ गया है कि सब एक हो गये हैं
किसे रहनुमा समझिए, किसे जानिए लुटेरा

शबे-ग़म गुज़र गयी है मैं 'हफ़ीज़' कैसे कह दूँ
वही तीरगी-ए-दिल[5] है वही ज़ेहन का अँधेरा

1.चंद्रमा और तारों की सभा 2.ओर 3.ख़ाना-ए-का'बा की चार दीवारी 4.उन्माद सुगन्ध 5.हृदय अंधकार

❀

अफ़साना-ए-ता'मीर[1] के उन्वान[2] बहुत हैं
जीना हो तो फिर ज़ीस्त[3] के सामान बहुत हैं

ये शीशा-ओ-साग़र मिरे आगे से हटा दे
मुझपर तिरी आँखों ही के एहसान बहुत हैं

जो अक़्ल के ताजिर हैं ज़रा सोच के आएँ
ये शहरे-जुनूँ[4] है यहाँ नुक़सान बहुत हैं

ये रहगुज़र-ए-इश्क़[5] है हुशियार मुसाफ़िर
इस राह में लुट जाने के इम्कान[6] बहुत हैं

देखे नहीं जाते तिरी आँखों में ये आँसू
हम तुझसे गिला करके पशेमान[7] बहुत हैं

समझे थे कोई उनका मुक़ाबिल ही नहीं है
आईना जो देखा है तो हैरान बहुत हैं

ऐ ज़ुल्फ़े-सनम आ तुझे सीने से लगा लें
तेरी ही तरह हम भी परेशान बहुत हैं

ख़ामोशी-ए-दरिया पे 'हफ़ीज़' आप न जाएँ
ख़ामोशी-ए-दरिया में भी तूफ़ान बहुत हैं

1.निर्माण कथा 2.शीर्षक 3.जीवन 4.उन्माद भरा नगर 5.प्रेम पथ 6.संभावना 7.लज्जित

❁

पर्दा-ए-लुत्फ़ में ये मश्क़े-सितम[1] क्या कहिए
हाए ज़ालिम तिरा अंदाज़े-करम क्या कहिए

रंग लाई है मिरी सोज़िशे-ग़म[2] क्या कहिए
हुस्न की आँख भी रहने लगी नम क्या कहिए

किस बुते-शोख़ ने फूँका है ये अफ़्सूँ[3] ऐ दोस्त
झिलमिलाने लगी क्यों शम-ए-हरम क्या कहिए

ऐ ग़मे-दोस्त तसद्दुक़ तिरी कैफ़ीय्यत के
खुल गया आज मसर्रत का भरम क्या कहिए

ज़ुल्फ़े-बरहम[4] तुझे मालूम नहीं है शायद
यूँ भी छाता है कभी अब्रे-करम[5] क्या कहिए

अहदे-हाज़िर[6] की मसीहा-न-फ़-सी[7] क्या कहना
ज़िंदगी बन गई तस्वीरे-अलम[8] क्या कहिए

अल्लह-अल्लाह तिरी दूरनिगाही[9] ऐ दिल
क़ब्ल-ए-आग़ाज़[10] से अंजाम का ग़म क्या कहिए

ये भी इक चाल है तस्ख़ीरे-मुहब्बत के लिए
वर्ना आप और मिरे सर की क़सम क्या कहिए

हो न हो आ ही गई मंज़िले-महबूब 'हफ़ीज़'
ख़ुद-बख़ुद क्यों रुके जाते हैं क़दम क्या कहिए

1.अत्याचार का अभ्यास 2.संताप ज्वलन 3.मन्त्र 4.क्रुद्ध केश 5.दया मेघ 6.वर्तमान काल 7.अनुप्राणन 8. शो चित्र 9.दूरदृष्टि 10.प्रारम्भ

❀

ज़ुल्फ़ को शाम, तो आरिज़[1] को सहर[2] कहते हैं
हम हर इक बात ब-अंदाज़े-दिगर[3] कहते हैं

महो-अंजुम[4] को समझते हैं तिरे नक़्शे-क़दम[5]
कहकशाँ को तिरी इक राहगुज़र[6] कहते हैं

मौत का नाम सुकूने-अ-ब-दी[7] रक्खा है
अरसा-ए-ज़ीस्त[8] को इक रक़्से-शरर[9] कहते हैं

ज़ख़्म को देते हैं तशबीह[10] गुले-ख़ंदाँ[11] से
दिल के हर दाग़ को हम रश्के-क़मर[12] कहते हैं

महफ़िले-इश्क़ में राइज है यही तर्ज़े-बयाँ
दिल का अफ़सना ब-उन्वाने-नज़र कहते हैं

न शरर है न धुआँ, पर है बला की सोज़िश[13]
है यही आग जिसे सोज़े-जिगर कहते हैं

कल जो हँसते थे मिरे दीदा-ए-गिर्यां[14] पे 'हफ़ीज़'
उनका दामन भी अब अश्कों से है तर, कहते हैं

1.गाल 2.प्रातः 3.अन्य प्रकार से 4.चान्द 5.पदचिन्ह 6.पथ 7अनन्त सुख 8.जीवनकाल 9.अग्निकणका नृत्य 10.उपमा 11.हर्षित फूल 12.चाँद की ईर्ष्या 13.ज्वलन 14.रोती आँखें

❀

ख़फ़ा है गर ये ख़ुदाई तो फ़िक्र ही क्या है
तिरी निगाह सलामत मुझे कमी क्या है

बस इक तजल्ली-ए-रंगीं[1] बस इक तबस्सुमे-नाज़[2]
रियाज़े-दहर में फूलों की ज़िंदगी क्या है

अबस[3] ये मश्क़े-रुकू-व-सुजूद[4] है यारो
अगर पता नहीं मफ़हूमे-बंदगी[5] क्या है

कहीं ये लुत्फ़े-इनायत की इब्तिदा[6] तो नहीं
तुम्हीं बताओ ये अंदाज़े-बरहमी[7] क्या है

दिलों के तार जो छू ले वही है शे'र 'हफ़ीज़'
अगर ये बात नहीं है तो शाइरी क्या है

1.रंजित आलोक 2.गर्व से भरी मुस्कान 3.व्यर्थ 4.पंचांग 5.भक्ति का आशय 6.आरंभ 7.क्रुद्धता शैली

❀

ज़िक्रे-जमाले-यार[1] से ज़ुल्मते-हिज्र छट गई
हँस पड़ी सुब्हे-ज़िंदगी दर्द की रात कट गई

मेरी निगाहे-शौक़ ने तोड़ दिया ग़ुरूरे-हुस्न
मैंने उठाई जब नज़र उनकी नक़ाब उलट गई

किसकी मजाल रोक दे मेरे जुनूँ का रास्ता
मुश्किले-राह भी मुझे राह दिखा के हट गई

दिल की कुशादगी न पूछ दिल है वो ज़र्फ़े-लाजवाब[2]
वुसअते-काएनात[3] भी जिसमें सिमट सिमट गई

उनकी अदा लिए हुए मौजे-नसीम[4] यूँ चली
मेरी किताबे-शौक़ का पिछला वरक़ उलट गई

मैंने कुछ इस तरह सहीं राहे-वफ़ा की सख़्तियाँ
मंज़िले-आरज़ू मिरी मुझसे लिपट लिपट गई

ख़ूब हुआ छलक पड़े साग़रे-अश्के-ग़म 'हफ़ीज़'
रू-ए-हयात[5] धुल गया, गर्दे-मलाल[6] छट गई

1.सौन्दर्य 2.अपूर्य साहस 3.ब्रह्माण्ड की विशालता 4.शीतल समीर का तरंग 5.जीवन मुख 6.दुख की धूलि

❀

आपकी याद आपका ग़म है
ज़िंदगी के लिए ये क्या कम है

ऐ मताऐ-सुकूँ[1] के दीवानो
ज़िंदगी इज़्तिराबे-पैहम[2] है

एक लग़्ज़िश[3] में सज गई दुनिया
क्या मुक़द्दस[4] गुनाहे-आदम है

आज खुल कर न रो सकी शबनम
आज फूलों मे ताज़गी कम है

आज तक उसकी उलझनें न गयीं
ज़िंदगी किस की ज़ुल्फ़े-पुरख़म[5] है

ज़िंदगी तो नहीं 'हफ़ीज़' कहीं
अब फ़क़त ज़िंदगी का मातम है

1.सुख की पूँजी 2. निरंतर विचलता 3. विचलन 4. पावन 5.वाकृित केश

❁

बहार आई है सहने-चमन की बात करो
निगाहे-साक़ी-ए-तौबा शिकन की बात करो

जुनूँ के सख़्त मराहिल गुज़र ही जाएँगे
किसी की ज़ुल्फ़े-शिकन दर शिकन की बात करो

ये तल्ख़ियाँ अभी शीरीनियों में घुल जाएँ
ग़ज़ल में उस बुते-गुंचा दहन की बात करो

वो इक निगाह जो काफ़ी है उम्र भर के लिए
उसी निगाह के मस्ताना पन की बात करो

जो चाहते हो ग़मे-ज़ीस्त ख़ुश-गवार बने
तो जाम उठाओ किसी गुलबदन की बात करो

हवाएँ इत्र-फ़शाँ हों फ़ज़ा महक उट्ठे
'हफ़ीज़' आओ ग़ज़ाले-ख़तन की बात करो

❀

कुछ सोच के परवाना महफ़िल में जला होगा
शायद इसी मरने में जीने का मज़ा होगा

हर स'ई-ए-तबस्सुम[1] पर आँसू निकल आए हैं
अंजामे-तरबकोशी[2] क्या जानिए क्या होगा

गुमराहे-मुहब्बत हूँ पूछो न मिरी मंज़िल
हर नक़्शे-क़दम मेरा मंज़िल का पता होगा

क्या तेरा मुदावा[3] हो दर्दे-शबे-तन्हाई
चुप रहिए तो बर्बादी, कहिए तो गिला होगा

कतरा के तो जाते हो दीवाने के रस्ते से
दीवाना लिपट जाए क़दमों से तो क्या होगा

मयख़ाने से मस्जिद तक मिलते हैं नुक़ूशे-पा
या शैख़ गये होंगे या रिंद[4] गया होगा

फ़रज़ानों[5] का क्या कहना हर बात पे लड़ते हैं
दीवाने से दीवाना शायद ही लड़ा होगा

रिंदों को 'हफ़ीज़' इतना समझा दे कोई जाकर
आपस में लड़ोगे तुम वाइज़ का भला होगा

1.मुस्कुराने का प्रयास 2.सुख पाने का परिणाम 3.उपचार 4.मद्यप (शराबी) 5.बुद्धिमान

क्या जानिए कब सहबा साग़र[1] में ढले साक़ी
जब तक तिरी आँखों से इक दौर चले साक़ी

हो नाम भी पीने का और दिल भी जले साक़ी
इस बादाकशी से हम प्यासे ही भले साक़ी

हैं कौन बुज़ुर्ग आख़िर हम भी तो ज़रा जानें
आते हैं जो पीने को कुछ रात ढले साक़ी

जिस बज़्म का हर मयकश[2] इक पीरे-तरीक़त[3] हो
उस बज़्म में वाइज़ की क्या दाल गले साक़ी

हम ग़म के सताए हैं गर तेरी इजाज़त हो
इक रात बसर कर लें ज़ुल्फ़ों के तले साक़ी

अंदाज़े-नज़र बदले वर्ना मुझे ये डर है
साग़र की जगह इक दिन ख़ंजर न चले साक़ी

1.मद्यपात्र 2.शराबी 3.गुरु

❁

दौर आसाँ था मुश्किलात के बाद
सुब्ह आई सियाह रात के बाद

आख़िरश[1] खुल गया कोई हमसे
कुछ ज़रूरी तकल्लुफ़ात के बाद

हाथ आई मता-ए-इल्मो-यक़ीं[2]
जाने कितने तवह्हुमात[3] के बाद

हादसा फिर कोई हुआ ही नहीं
आप की चश्मे-इल्तेफ़ात[4] के बाद

रब्ते-दिल[5] बढ़ गया कुछ और हफ़ीज़
उनसे तर्के-तअल्लुक़ात[6] के बाद

1.अंततः 2.ज्ञान और विश्वास की पूँजी 3.अन्धविश्वास 4.ध्यान की नज़र 5.हृदय से सम्बन्ध 6.सम्बन्ध त्याग

❀

याद आ गया ख़ुदा रुख़े-जानाना[1] देख कर
ईमान जाग उठा है सनमख़ाना देख कर

उस चश्मे-मय-चकाँ[2] का ख़याल आ गया था कुछ
हम खो गये जो सूरते-पैमाना देख कर

काशाने यूँ तो और भी सहने-चमन[3] में थे
बिजली मगर गिरी मिरा काशाना देख कर

ये रहगुज़ारे-इश्क़ बड़ी संग-लाख़[4] है
रखना क़दम यहाँ दिले-दीवाना देख कर

आया हमें भी फ़ित्ना-ए-महशर[5] का ऐ'तबार
साक़ी की एक लग़्ज़िशे-मस्ताना[6] देख कर

अफ़साना-ए-हयात बहुत तल्ख़ है 'हफ़ीज़'
धोका न खाओ सुर्ख़ी-ए-अफ़साना[7] देख कर

1. प्रियतम का मुख 2. मद्य टपकाने वाली आँखों वाला (प्रेयसी) 3. उद्यान प्रांगण 4. कठिन 5. प्रलय क्षेत्र का आपद 6. उन्मत्त विचलन 7. कहानी का शीर्षक

किस को हो फ़िक्रे-अलम[1] फ़िक्रे-अलम कौन करे
ग़म तुम्हारा है तो फिर शिकवा-ए-ग़म कौन करे

जब मुझे खुद भी नहीं अपने ज़ियाँ[2] का एहसास
मेरे अहवाले-शिकस्ता[3] पे करम कौन करे

हाए अफ़सोस कि अब अश्क भी आँखों में नहीं
दिल की तस्कीन के सामान बहम[4] कौन करे

मुझको ये कैफ़ियते-बेतलबी[5] क्या कम है
मिन्नते-साक़ी-ओ-पैमाना-ए-जम कौन करे

फ़ितरते-इश्क़ है आज़ाद हमेशा से 'हफ़ीज़'
सज्दा-ए-शौक़ को पाबंदे-हरम कौन करे

1.दुख की चिन्ता 2.हानि 3.खण्डित अवस्था4.अर्जित 5.लोभ से मुक्त स्थिति

❁

पैग़ाम दिया है कभी पैग़ाम लिया है
आँखों से मुहब्बत में बड़ा काम लिया है

गुज़रा है जो बेख़ौफ़ गुज़रगाहे-तलब[1] से
मंज़िल का सलाम उसने बहरगाम[2] लिया है

जब ज़िक्र छिड़ा है मिरी बर्बादी-ए-दिल का
दुनिया ने मिरे साथ तिरा नाम लिया है

ये बात अलग है कि ख़ता किस से हुई थी
दीवानों ने सब अपने सर इल्ज़ाम लिया है

मजबूरी-ए-हालात ने वो दिन भी दिखाए
ज़हराब[3] से लुत्फ़े-मय-गुलफ़ाम[4] लिया है

याद आए जो गुज़रे हुए लम्हाते-मुहब्बत
वो चोट पड़ी है कि जिगर थाम लिया है

हर सुब्ह किया तर्के-तअल्लुक़ का इरादा
हर शाम मगर हमने तिरा नाम लिया है

हूँ तिश्ना[5] 'हफ़ीज़' आज तक इस जुर्म के बाइस[6]
साक़ी की नज़र से कभी इक जाम लिया है

1.याचना पथ 2. हर पग पर 3.ज़हर मुक्त पानी 4. शराब का मज़ा 5.प्यासा 6. कारण

❁

रहज़नी[1] राहनुमाई[2] के क़रीब आ पहुँची
हर बुरी बात भलाई के क़रीब आ पहुँची

पस्ती-ए-ज़ौक़े-समाअत[3] हुई इतनी अफ़ज़ूँ[4]
नग़मगी तल्ख़-नवाई[5] के क़रीब आ पहुँची

उफ़ रे ये दौरे-तरक़्क़ी, ये तमद्दुन[6] की बहार
बंदगी बढ़ के ख़ुदाई के क़रीब आ पहुँची

महरमे-राज़े-मुहब्बत[7] न हुई तादमे-ज़ीस्त
अक़्ल हर उक़्दाकुशाई[8] के क़रीब आ पहुँची

गुफ़्तगू हुस्ने-बहाराँ की थी लेकिन ऐ दोस्त
बढ़ के तेरी ख़ुश-अदाई के क़रीब आ पहुँची

रह-नवर्दी[9] का मज़ा उसको मिला जिसकी हयात
मंज़िले-आबलापाई[10] के क़रीब आ पहुँची

लज़्ज़ते-सुब्ह मुलाक़ात हुई पा-बा रकाब[11]
ज़िंदगी शामे-जुदाई के क़रीब आ पहुँची

हुस्न की ज़िद हुई कब बाइसे-पैकार[12] 'हफ़ीज़'
बात जब सुल्हो-सफ़ाई के क़रीब आ पहुँची

1.बटमानी 2.पथदर्शन 3.श्रुति आभिरुचि की निम्नता 4. अधिक 5. कटुता 6. संस्कृति 7.प्रेम रहस्य का ज्ञाता 8.निवारण समस्या 9.यात्रा 10.पाँव में छाले पड़ना 11.चलने को तैयार 12.संग्राय का कारण

❁

गुंचों का तज़किरा है न गुल-हाए-तर की बात
अब हम हैं और जराहते-क़ल्बो-नज़र[1] की बात

उसने कहा था कुछ कि जहाँ वाले ले उड़े
इक दास्ताँ बनी निगाहे-मुख़्तसर[2] की बात

जुरअत थी जिनमें तोड़ के फ़ितराक[3] उड़ गये
हम लोग सिर्फ़ करते रहे बालो-पर की बात

दैरो-हरम[4] में आज है मौज़ू-ए-गुफ़्तगू[5]
मेरी जबीं[6] का ज़िक्र तिरे संगे-दर[7] की बात

तज़ईने-काएनात[8] के अफ़साने में हफ़ीज़
है सब से दिलनवाज़[9] ख़ता-ए-बशर[10]की बात

1.हृदय और नज़र का घाव 2.एक हल्की नज़र 3.शिकारियों का थैला 4.मन्दिर, मस्जिद 5.वार्तालाप का विषय 6. मस्तक 7.द्वार शिला 8.ब्रह्माण्ड सज्जा 9.हृदय स्पर्शी 10.मनुष्य के दोष

❁

जिगर का ख़ून देकर बादा-ए-गुलफ़ाम लेते हैं
हज़ारों जाम देते हैं अगर इक जाम लेते हैं

वही ईनाम देते हैं वही ईनाम लेते हैं
हमारा नाम तो वो बस बराए-नाम लेते हैं

जुनूँ वालों का ये तुर्फ़ा[1] तमाशा देखते जाओ
क़दो-गेसू[2] से अब दारो-रसन का काम लेते हैं

ज़रा ये बदमज़ाक़ी देखिएगा अह्दे-हाज़िर की
सहर[3] का इम्तिहाँ आवारगाने-शाम[4] लेते हैं

तुम्हारी ज़ुल्फ़ को अब और बरहम कौन देखेगा
हम अपने सर बलाए-गर्दिशे-अय्याम[5] लेते हैं

सरे-मयख़ाना हम भी लग़्ज़िशों की दाद चाहेंगे
सुना है गिरने वालों को वो बढ़ कर थाम लेते हैं

1.विचित्र 2.आकार और लट 3.प्रातः 4.कुचरित्र संध्या के 5.कालचक्र

❀

तदबीर के दस्ते-रंगीं[1] से तक़दीर दरख़्शाँ[2] होती है
क़ुदरत भी मदद फ़रमाती है जब कोशिशे-इंसाँ होती है

शोख़ी ही पे कुछ मौक़ूफ़ नहीं ये इश्क़ की दुनिया है इस में
पाकीज़ा अदा, मासूम नज़र भी दुश्मने-ईमाँ होती है

काँटे भी चमन की दौलत हैं, काँटों से ये नफ़रत क्या मानी
ऐ बाग़ के माली होश में आ, तौहीने-बहाराँ[3] होती है

सब हालते-दिल पर मबनी[4] है, क्या मौसमे-गुल, क्या फ़स्ले-ख़िजाँ
मसरूर अगर दिल होता है, फ़ितरत भी ग़ज़ल-ख़्वाँ होती है

आशुफ़्तासरी[5] से बाज़ आए इक उम्र हुई दीवानों को
अब किस के लिए ये ज़ुल्फ़े-सियह रह-रह के परेशाँ होती है

क्या उनके छुपाने से होता क्या मेरी ख़मोशी काम आती
जब दिल में मुहब्बत होती है चेहरे से नुमायाँ होती है

गुलचीं[6] है शिकारे-कम निगही, ये राज़ उसे मालूम कहाँ
काँटों की हयाते-बेरौनक़ फूलों की निगहबाँ होती है

मायल-ब-करम[7] होता है कोई जब हाले-'हफ़ीज़े'-खस्ता[8] पर
दुनिया तो यही होती है मगर फ़िरदौस-बदामाँ[9] होती है

1. रंजित हस्त 2. प्रकाशमान/चमकीला 3. बसंत का अपमान 4. निर्भर 5. पागलपन 6. माली 7. दया की ओर आकृष्ट 8. दुखित 9. आँचल में स्वर्ग

❁

दर्दे-दिल याद नहीं दर्दे-जिगर याद नहीं
तेरी दुज़दीदा निगाही[1] का असर याद नहीं

उफ़ रे ये गर्दिशे-दौराँ[2] ये फ़ुसूने-अय्याम[3]
तेरे वहशी को तिरी राहगुज़र याद नहीं

अब न ज़ुल्फ़ों का तसव्वुर है न आरिज़ का ख़याल
अब मुहब्बत की कोई शामो-सहर याद नहीं

मेरी वहशत का सबब पूछने वाले ये बता
क्या तुझे अपनी इनायत की नज़र याद नहीं

ग़म की यूरिश[4] है मगर ज़र्फ़[5] तो देखो मेरा
शुक्र है मेरे लबों पर कोई फ़रियाद नहीं

तुमने इक वा'दा किया था जिसे इक उम्र हुई
हम तुम्हें याद दिलाते हैं अगर याद नहीं

ख़ुदफ़रामोशी-ए-अरबाबे-सफ़र[6] क्या कहिए
फ़िक्रे-मंज़िल तो है मक़सूदे-सफ़र[7] याद नहीं

रास्ता एक ज़माने को दिखाते थे 'हफ़ीज़'
अब ये आलम है कि ख़ुद अपना ही घर याद नहीं

1. कखियों से देखना 2. कालचक्र 3. दिनों के मंत्र तंत्र 4. आक्रमण 5. साहस 6. सहयात्रियों का खोया खोया रहना 7. यात्रा का उद्देश्य

❁

रात जितनी तवील[1] होती है
सुब्हे-नौ[2] की दलील होती है

तेरे हुस्नो-जमाल का परतव
मेरी फ़िक्रे-जमील[3] होती है

याद आती है उनकी चारागरी[4]
जब तबीअत अलील[5] होती है

उनकी हर इक अदा हर एक नज़र
बेबदल बेअदील[6] होती है

दोस्तो! मौत उनसे मिलने की
अस्ल में इक सबील[7] होती है

आओ ज़ुल्फ़ों की दास्ताँ छेड़ें
हिज्र[8] की शब तवील होती है

अक़्ल से आशिक़ी को क्या निस्बत
ये तो बे क़ालो-क़ील[9] होती है

और कुछ रोज़ जी लें अहले-सितम[10]
उसकी रस्सी में ढील होती है

सारी फ़िरौनियत 'हफ़ीज़' इक दिन
ग़र्क़े[11]-दरिया-ए-नील होती है

1.दीर्घ 2.नवीन प्रातः 3.सुन्दर चिंतन 4.उपचार 5.अस्वस्थ 6.अतुल्य 7.उपाय 8.वियोग 9.तर्कावर्तक 10.अत्याचारी 11.निमग्न

❀

गुमराह कह के पहले जो मुझसे ख़फ़ा हुए
आख़िर वो मेरे नक़्शे-क़दम पर फ़िदा हुए

ऐसा नहीं कि दिल ही मुक़ाबिल[1] नहीं रहा
तीरे-निगाहे-नाज़ भी अक्सर ख़ता[2] हुए

मेरी नज़र ने तुमको जमाल आशना[3] किया
मुझको दुआएँ दो कि तुम इक आईना हुए

क्या होगा इससे बढ़ के कोई रब्ते-बाहमी[4]
मंज़िल हमारी वो तो हम उनका पता हुए

अब क्या बताएँ किसकी निहागों की देन थी
वो मय कि जिसके पीते ही हम पारसा हुए

सुनता हूँ इक मुक़ामे-ज़ियारत है आज कल
वो ज़िंदगी का मोड़ जहाँ हम जुदा हुए

वो आ गये दवा-ए-ग़मे-जाँ लिए हुए
लो आज हम भी क़ाइले-दस्ते-दुआ हुए

कब ज़िंदगी ने हमको नवाज़ा नहीं हफ़ीज़
कब हम पे बाबे-लुत्फ़ो[5]-इनायात न वा[6] हुए

1.सम्मुख 2.चुकना 3.सौन्दर्य का परिचित 4.पारस्परिक सम्बन्ध 5.कृपा के द्वार 6.खुलना

❀

जाने क्या बात है काहे का गिला है हम से
ज़िंदगी नाम की इक चीज़ ख़फ़ा है हम से

हमने तो आलमे-वहशत[1] में भी छेड़ा न उसे
क्यों कशीदा[2] ये तिरी ज़ुल्फ़-ए-दोता[3] है हम से

हम पशेमाँ[4] नहीं नाज़ाँ हैं ख़ता-ए-दिल पर
जुर्म है इश्क़ तो ये जुर्म हुआ है हमसे

ज़िंदगी अपनी शिकारे-शबे-ज़ुल्मत[5] ही सही
ज़ौ-फ़िगन[6] महफ़िले-अख़्लासो-वफ़ा है हमसे

हम से बरहम[7] हो न क्यों रस्म परस्तों का मिज़ाज
इक नए दौर का आग़ाज़ हुआ है हमसे

कोई पुरसाने-मरीज़े-शबे-हिज्राँ[8] न रहा
इक तिरी याद थी सो वो भी ख़फ़ा है हमसे

हमने यारो कभी ज़हराब[9] को अमृत न कहा
बस इसी बात पे मयख़ाना ख़फ़ा है हमसे

1. चित्तविकृति अवस्था 2. रिवन्न 3. टेढ़ा केश 4. लज्जित 5. अँधेरी रात का शिकार 6. प्रकाश युक्त 7. क्रुद्ध 8. विरह-निशा 9. विष

हुस्न से दोस्ती थी बहुत दिन हुए
ज़िंदगी ज़िंदगी थी बहुत दिन हुए

लोग कहते हैं जिस को मय-सरख़ुशी[1]
मेरे साग़र में भी थी बहुत दिन हुए

मेरी गुमगशतगी[2], मेरी दीवानगी
रश्के-सदआगही[3] थी बहुत दिन हुए

सज्दा-ए-शौक़ थे और पाए-सनम
बंदगी बंदगी थी बहुत दिन हुए

कोई ग़म ही न था उनके ग़म के सिवा
आशिक़ी आशिक़ी थी बहुत दिन हुए

दिल था और एक दुनिया-ए-हुस्ने-ख़याल
रोज़ो-शब शायरी थी बहुत दिन हुए

बेक़रारी में भी एक आराम था
ग़म में भी इक ख़ुशी थी बहुत दिन हुए

मेरे हमराह इक चाँद को देख कर
रहगुज़र हँस पड़ी थी बहुत दिन हुए

उन की आँखों के मस्ती भरे जाम से
तौबा टकरा गई थी बहुत दिन हुए

है इसी की सज़ा ये हयात ऐ 'हफ़ीज़'
इक ख़ता हो गई थी बहुत दिन हुए

1.प्रसन्नता की शराब 2.लुप्त होना 3.ज्ञान के लिए ईर्ष्या का कारण

❀

वो फ़ुसुने-जल्वा-ए-यक नज़र[1] तुम्हें याद हो कि न याद हो
वो सुपुर्दगी-ए-दिलो-जिगर[2]तुम्हें याद हो कि न याद हो

मिरे दिल के तारों को छेड़ कर, सरे-अंजुमन मुझे देख कर
वो सलामे-शौक़ बहर नज़र तुम्हें याद हो कि न याद हो

मिरे लब तक आके जो रह गई, मिरी ख़ामुशी जिसे कह गई
वो हिकायते-ग़मे-मो'तबर[3] तुम्हें याद हो कि न याद हो

वो बसद हिजाबो-बसद अदा लबे-नाज़नीं से इक इल्तिजा
कभी आइएगा हमारे घर तुम्हें याद हो कि न याद हो

वो क़दम-क़दम पे मुसीबतें, वो रुकावटें वो जराहतें[4]
वो जुनूँ की वादी-ए-पुरख़तर[5] तुम्हें याद हो कि न याद हो

कोई बात हो कोई मसअला वो हमारा बाहमी मश्वरा
वो ख़याले-ख़ातिरे यक दिगर तुम्हें याद हो कि न याद हो

मिरे हाल पर वो इनायतें वो ज़माने भर से बग़ावतें
वो तुम्हारी जुरअते-कारगर[6] तुम्हें याद हो कि न याद हो

जहाँ लड़खड़ाए मिरे क़दम वहीं तुमने हाथ बढ़ा दिए
मुझे याद है मिरे हमसफ़र, तुम्हें याद हो कि न याद हो

वो शुरू-ए-इश्क़ की कैफ़ियत, वो तलाशे-गोशा-ए-आफ़ियत[7]
वो नज़ाकते-ख़लिशे-जिगर[8] तुम्हें याद हो कि न याद हो

ये तुम्हारी ज़ुल्फ़े-सियाह थी, मिरा दोश था शबे-माह थी
अभी कल की बात है सब मगर तुम्हें याद हो कि न याद हो

जिसे कहिए माय-ए-सद ख़ुशी[9] जिसे कहिए हासिले-ज़िंदगी
वही एक लम्हा-ए-मुख़्तसर तुम्हें याद हो कि न याद हो

तुम्हें कल जो दिल से अज़ीज़ था वो यही तुम्हारा 'हफ़ीज़' था
मगर अब ये शायरे-दीदावर[10] तुम्हें याद हो कि न याद हो

1. एक नज़र की छवि का इन्द्रजाल 2. दिल और जान का समर्पण 3. विश्वस्त दुख की कथा 4. आघात 5.ख़तरनाक घाटी 6. प्रभावकारी साहस 7. एकाँत कोण की तलाश 8. वेदना की कोमलता 9. हर्ष की पूँजी 10. चेतनाशील

❀

फ़िक्रे-कौसर,[1] न फ़िक्रे-जन्नत है
हाँ तुझे देखने की हसरत है

काश-अहले-हवस[2] समझ सकते
मक़सदे-ज़िंदगी मुहब्बत है

मुश्किले-जादा-ए-वफ़ा[3] मत पूछ
हर क़दम इक नई क़यामत है

मौत है मुसतक़िल सुकूनो-जमूद[4]
ज़ीस्त सरगर्मी-व-हरारत[5] है

मेरे नासेह मुझे मुआफ़ करो
मुझको इक दोस्त की ज़रूरत है

यादे-जानाँ है और शम'अ-ए-ख़याल
कितनी पुरनूर शामे-फ़ुर्क़त[6] है

भाग जाए है सहने-काबा[7] से
दिल अजब काफ़िरे-मुहब्बत है

हम कहाँ और कहाँ वो बज़्मे-नाज़[8]
इश्क़ ये सब तिरी करामत है

*हर हक़ीक़त है एक हुस्न 'हफ़ीज़'
और हर हुस्न इक हक़ीक़त है*

1.स्वर्ग की नहर 2.कामलोलुप लोग 3.निर्वाह पथ की कठिनाई 4.स्थिरता और जड़ता 5.प्रयास और ऊष्णता 6.विरह की शाम 7.का'बा का प्रांगण 8.गर्वशाली गोषठी
*Beauty is truth, truth is beauty (Keats)

❀

इश्क़ में हर नफ़स[1] इबादत है
मज़हबे-इश्क़ आदमियत है

ज़िंदगी नामे-रंजो-ग़म ही सही
फिर भी किस दर्जा ख़ूबसूरत है

हुस्न जिस शक्ल में जहाँ भी हो
एक सरचश्म-ए-मसर्रत[2] है

कौन सुलझाए गेसू-ए-दौराँ[3]
अपनी उलझन से किस को फ़ुर्सत है

ग़मे-कौनो-मकाँ[4] समा जाए
दामने-दिल में इतनी वुसअत[5] है

सितमे-दोस्त हो कि लुत्फ़े-दोस्त
जो भी मिल जाए वो ग़नीमत है

उनको देखेंगे बेहिजाब 'हफ़ीज़'
शौक़े-दीदार अगर सलामत है

1.क्षण 2.उल्लास का स्रोत 3.काल केशपाश 4.संसार का दुःख 5.विस्तार

❀

कोई बर्क़[1] थी कि चमक गई, कोई शो'ला था कि लपक गया
मिरे शौक़े-दीद[2]को क्या मिला जो नक़ाबे-हुस्न सरक गया

उसे ज़र्फ़े-बादा-कशाँ[3] कहूँ, कि फ़ुसूने-चश्मे-मुग़ाँ[4] कहूँ
कोई पी के भी रहा तिश्ना-लब[5], कोई बे पिए ही बहक गया

कभी बज़्मे माहो-नुजूम[6] में कभी गुलरुख़ों के हुजूम में
तिरा रंगे-हुस्न बसद अदा, हर इक आइने में झलक गया

बहज़ार कोशिशे-ज़ब्त भी तिरा दर्द हम न छुपा सके
कभी आह बन के निकल गया, कभी अश्क बन के टपक गया

है अजीब बात कि बेशतर मिला मंज़िलों से वही क़दम
वही राह-रौ हुआ मोहतरम जो रहे-तलब में भटक गया

बड़ा हौसला था ज़माने को कि मिरा हरीफ़े-सफ़र[7] बने
अभी दो क़दम भी चला ना था मिरे साथ-साथ कि थक गया

जिसे लोग कहते हैं आदमी है 'हफ़ीज़' उसकी अजब अदा
कभी पस्तियों में उतर गया कभी उड़ के ता-बा-फ़लक[8] गया

1.तड़ित 2.दर्शन अभिलाषा 3.मद्यप का साहस 4, 5.प्यासा 6.चाँद सितारों की सभा 7.यात्रा का प्रतिद्विन्दी 8.आकाश तक

❁

मुश्किलों का ग़म कैसा सबको ताक़ पर रख दे
जब सफ़र पे निकला है हर थकन को घर रख दे

साक़िया शराबों से भर दे सबके पैमाने
और मेरे साग़र में अपनी इक नज़र रख दे

मेरे दिल का कहना है लड़ना आख़िरी दम तक
क़ातिलों की ये ज़िद है ख़ंजरों पे सर रख दे

यूँ नगर-नगर फिरना इक अज़ाब है यारब
तू हमारे हाथों में और कुछ हुनर रख दे

फिर मिरे ख़यालों में रंगो-नूर भर जाएँ
फिर कोई किताबों में तितलियों के पर रख दे

दोस्ती बुलाती है हमको अपनी बाँहों में
तेग़[1] रख रहा हूँ मैं तू भी अब तबर[2] रख दे

धूप इस बला की है, आँख खोलना मुश्किल
कोई मेरी राहों में कुछ हरे शजर[3] रख दे

मैं न देख पाऊँगा तुझको और नमदीदा[4]
तू अब इन चराग़ों को मेरी पलकों पर रख दे

यूँ सुलग रहा हूँ मैं ऐ 'हफ़ीज़' मुद्दत से
जैसे ख़ुश्क पत्तों में कोई कुछ शरर रख दे

1.खड्ग 2.कुठार 3.वृक्ष 4.सजल

❁

मिरा दिल जिसे न उठा सके तू मुझे वो बारे-गिराँ[1] न दे
जिसे शीशा-गर[2] की निगाह दी उसे पत्थरों का जहाँ न दे

मैं शहीदे-ग़म्ज़-ए-यार[3] हूँ, मैं क़तीले-फ़स्ले-बहार[4] हूँ
कोई सुन न ले मिरी दास्ताँ मिरे ज़ख़्म को तू ज़बाँ ने दे

कभी जिस की छाँव में दो घड़ी न ठहर सके कोई ख़स्ता-जाँ
वो दरख़्त कोई दरख़्त है जो मुसाफ़िरों को अमाँ न दे

मुझे तूने क्या न दिया मगर ये करम भी कर मिरे हाल पर
जो मिरे ही हक़ में बला बने मुझे ऐसी ताबो-तवाँ[5] न दे

उसे इख़्तियारे-तमाम है, वही मयकदे का इमाम है
जिसे चाहे बख़्श दे मयकदा, जिसे चाहे पीरे-मुग़ाँ[6] न दे

सरे-अंजुमन जो छलक गये जो ज़रा सी पी के बहक गये
उन्हें और कोई ख़िताब दे उन्हें नामे-बादा-कशाँ[7] न दे

कोई ज़िंदगी है ये ज़िंदगी कि हमेशा कुश्त-ए-ग़म[8] रहे
मुझे कुछ न दे मगर ऐ ख़ुदा ये अज़ाबे-सूदो-ज़ियाँ[9] न दे

ग़मे-आशिक़ी है बुरी बला, ग़मे-आशिक़ी से बचे रहो
तुम्हें क्या ख़बर मिरे दोस्तो! ये वो आग है जो धुआँ न दे

जहाँ सुनने वाला भी हो कोई, वहीं ऐ 'हफ़ीज़' सदा लगा
किसी मक़बरे से न बात कर, किसी दश्त[10] में तू अज़ाँ न दे

1.भारी बोझ 2.शीशा की चीज़ें बनाने वाला 3.मित्र के कटाक्ष का साक्षी 4.बसंत ऋतु का बधित 5.सामर्थ्य 6.शराब बेचने वाला 7.शराबी 8.दुख का मारा 9.लाभ हानि का दण्ड 10.वन

लगा न उसकी अना[1] का सुराग़[2] रहने दे
वो बद-दिमाग़ सही, बद-दिमाग़ रहने दे

यही तो एक निशानी है अहदे-रफ़्ता[3] की
दिले-हज़ीं[4] पे मुहब्बत का दाग़ रहने दे

तू अपने जाम मय-लाला-गूँ[5] से भरता जा
हमारे सामने ख़ाली अयाग़[6] रहने दे

अजब नहीं यही तीराशबी[7] में काम आए
बुझा हुआ सही घर में चराग़ रहने दे

किसे फ़राग़[8] मिला ज़िंदगी की राहों में
क़दम बढ़ाए जा, फ़िक्रे-फ़राग़ रहने दे

तू हमसे छीन ले हर चीज़ लेकिन ऐ दुनिया
हमारे पास हमारा दिमाग़ रहने दे

इसी में क़ाफ़िला-ए-नौ-बहार ठहरेगा
ख़िज़ाँ[9] की गोद में कुछ दिन ये बाग़ रहने दे

तू अंदलीब[10] है, अपनी नवा[11] ख़राब न कर
चमन में है जो अभी दौरे-ज़ाग़[12] रहने दे

ये काम आएँगे बुनियादे-बज़्मे-नौ[13] के लिए
'हफ़ीज़' तू ये शिकस्ता अयाग़ रहने दे

1.स्वभिमान 2.खोज 3.भूतकाल 4.खिन्न हृदय 5.एक प्रकार का शराब 6.प्याला 7.अँधेरी रात 8.विश्राम 9.पतझड़ 10.बुलबुल 11.स्वर 12.कौवा 13.नई गोष्ठी का आधार

❁

ग़म याद रहेगा, न ख़ुशी याद रहेगी
हाँ आपकी बेगाना-रवी[1] याद रहेगी

हर क़ल्ब निशाना है किसी तीरे-सितम का
हालात की नावक-फ़गनी[2] याद रहेगी

ऐ बादे-बहारी तिरे ईनाम के सदक़े
ज़ख़्मों की ये गुल-पैरहनी[3] याद रहेगी

उर्यानी-ए-नज़्ज़ारा[4] से महजूब[5] हैं नज़रें
तहज़ीब[6] की ये जामादरी[7] याद रहेगी

इक दर्दे-मुजस्सम[8] नज़र आता है ज़माना
इस दौर की ईसा-नफ़सी[9] याद रहेगी

मक़सूदे-सफर भूल गये जोशे-सफ़र में
यारों की ये बेराहरवी याद रहेगी

सर ख़म[10] न हुआ मस्लहते-वक़्त[11] के आगे
दुनिया को मिरी कज-कुलही[12] याद रहेगी

दिन तिश्ना-लबी के तो गुज़र जाएँगे लेकिन
साक़ी तिरी पैमाँ-शिकनी[13] याद रहेगी

भूलेगा कोई कैसे 'हफ़ीज़' अपने वतन को
का'बे में भी काशी की गली याद रहेगी

1.अपरिचित व्यवहार 2.तीर चलावा 3.पोशाक का फूल की तरह होना 4.नग्न दृष्य 5.लज्जित 6.सभ्यता 7.तिरस्कार 8.साकार दुख 9.फूँक से मुर्दों को ज़िंदा करना 10.झुकना 11.समय के हित में 12.बाँकपन 13.प्रण तोड़ना

अहले-दिल, अहले-वफ़ा, अहले-नज़र होने तक
देखें क्या गुज़रे है तक्मीले-बशर[1] होने तक

कितने फूलों का बदन चाट चुकेंगे शोले
अब्रे-बाराँ[2] का गुलिस्ताँ में गुज़र होने तक

कौन देखेगा तड़पना तिरे बीमारों का
डूब जाएँगे सितारे भी सहर होने तक

अहले-महफ़िल मुझे ढूँढ़ेंगे बहुत मेरे बाद
रंगे-महफ़िल है मिरा ख़ूने-जिगर होने तक

बस्तियाँ अपनी बसा लेंगे बसाने वाले
दश्त कब दश्त रहेगा मिरा घर होने तक

कौन जाने कि लहू कितना उगलना होगा
ग़ुंचा-ए-नौ को चमन में गुलेतर होने तक

बात इक शब की जो होती तो कोई बात न थी
हम को जलना है यहाँ उम्र बसर होने तक

सीना-ए-संग[3] से ले आनी है इक जू-ए-लबन[4]
तेशाज़न[5] रहना है ये मारका सर होने तक

कुंजे-ज़िंदाँ[6] में भी इक जश्न मनाएँगे 'हफ़ीज़'
सर को टकराएँगे दीवार में दर होने तक

1. मनुष्य के पूर्ण होने तक 2. मेघ 3. पत्थर का सीना 4. ज़रा सा दूध 5.बसोला चलाने वाला 6.कारागृह

❀

कोई बतलाए कि ये तुर्फ़ा तमाशा क्यों है
आदमी भीड़ में रहते हुए तन्हा क्यों है

पाँव फैलाए हुए ग़म का अँधेरा क्यों है
आ गई सुब्हे-तमन्ना[1] तो फिर ऐसा क्यों है

मैं तो इक ज़र्रा-ए-नाचीज़ हूँ और कुछ भी नहीं
वो जो सूरज है मिरे नाम से जलता क्यों है

कौन सा अहद[2] है जिस अहद में हम जीते हैं
दश्त तो दश्त है, दरिया यहाँ प्यासा क्यों है

पी के बहकेगा तो रुस्वाइ-ए-महफ़िल होगी
वो जो कमज़र्फ़[3] है मयख़ाने में आया क्यों है

कोई आसेब है या सिर्फ़ निगाहों का फ़रेब
एक साया मुझे हर सू नज़र आता क्यों है

याद किस की महो-ख़ुर्शीद लिए आई है
शबे-तारीक में आज इतना उजाला क्यों है

बदहवासी का ये आलम कभी पहले तो न था
हश्र से पहले ही ये हश्र-सा बर्पा क्यों है

1.अभिलाषा का प्रातः 2.काल 3.अल्प साहसी

हर सुब्ह हदीसे-रुख़े-जानाना[1] कहे है
हर शाम किसी ज़ुल्फ़ का अफ़साना कहे है

समझे न ज़माना तो क़सूर उसकी समझ का
दीवाना तो हर बात हकीमाना[2] कहे है

महफ़िल भी है ख़ामोश, लबे-शम'अ भी ख़ामोश
अफ़साना-ए-शब लाशा-ए-परवाना[3] कहे है

कुछ आप भी इरशाद करें अपनी ज़ुबाँ से
कहने को ये दुनिया हमें क्या क्या न कहे है

टूटे हुए दिल टूटे हुए जामो-सुबू हैं
कुछ और ही अब सूरते-मयख़ाना कहे है

1.प्रियतम का मुख 2.वैधिक 3.पतिंगा का शव

❁

रात का नाम सवेरा ही सही
आप कहते हैं तो ऐसा ही सही

क्या बुराई है अगर देख लें हम
ज़िंदगी एक तमाशा ही सही

कुछ तो काँधों पे लिए हैं हम लोग
अपने अरमानों का लाशा ही सही

पीछे हटना हमें मंज़ूर नहीं
सामने आग का दरिया ही सही

क्या ज़रूरी है कि मैं नाम भी लूँ
मेरा दुश्मन कोई अपना ही सही

क़त्ल कर देगी उसे भी दुनिया
अपने युग का वो मसीहा ही सही

आइना देख के डर जाता हूँ
आइना मेरा शनासा[1] ही सही

तुम तो मौसम की तरह मत बदलो
अब ज़माने का ये शेवा[2] ही सही

मेरा क़द आप से ऊँचा है बहुत
मैं 'हफ़ीज़' आप का साया ही सही

1.परिचित 2.रीति

❁

मुस्कुराते हुए हर ग़म से गुज़र जाएँगे
ज़िंदगी हम तिरी आग़ोश में मर जाएँगे

बेहिजाबी ही अगर रस्मे-ज़माना ठहरी
हम कहाँ ले के ये तहज़ीबे-नज़र जाएँगे

साथ चलने की क़सम खा के चले हैं जो लोग
मुख़्तलिफ़ राहों में इक रोज़ बिखर जाएँगे

नाख़ुदाओं[1] का तलातुम[2] में भरोसा न करो
छोड़ कर तुम को ये ख़ुद पार उतर जाएँगे

तुझको मालूम है ऐ गर्दिशे-दौराँ तो बता
घर से जो दूर हैं कब लौट के घर जाएँगे

यूँ तो रुकते नहीं हम लोग कहीं राहों में
आप आवाज़ अगर दें तो ठहर जाएँगे

जिनको जीना है वो मक़तल में भी जी लेंगे 'हफ़ीज़'
जिनको मरना है कहीं भी हों वो मर जाएँगे

1. नाविक 2. तूफ़ान

❀

ज़ुल्फ़ की शाम न आरिज़[1] की सहर है लोगो
ज़िंदगी दर्द की इक राहगुज़र है लोगो

मैं तो आसानी-ए-मंज़िल[2] का तलबगार नहीं
मेरी मंज़िल तो मिरा ज़ौक़े-सफ़र है लोगो

आज की रात ग़नीमत है मना लो इक जश्न
क्या हो कल सुब्ह किसे इसकी ख़बर है लोगो

बारे-आशुफ़्ता-सरी[3] कैसे उतारा जाए
कोई दीवार है सहरा[4] में न दर है लोगो

कौन सी शाख़ पे बुनियादे-नशेमन रखिए
अब तो हर शाख़ पे इक रक़्से-शरर[5] है लोगो

ख़ुद को देखे कि ज़माने को सँवारे कोई
फ़ुर्सते-ज़ीस्त फ़क़त एक नज़र है लोगो

क्या तअज्जुब जो है महरूमे-ज़रो-सीम[6] 'हफ़ीज़'
ये भी दीवाना-ए-अफ़कारो-नज़र[7] है लोगो

1.गाल 2.लक्ष्य की सरलता 3.पागलपन का बोझ 4.मरुस्थल 5.अग्निकण का नृत्य 6.धन दौलत से वंचित 7.चिंतन और चितवन का उन्मत्त

❁

किसी मुक़ाम पे ख़त्मे-सफ़र नहीं होता
जुनूँ-ज़दों[1] का कोई मुस्तक़र[2] नहीं होता

सियाह रात से बर्सों लड़ाई होती है
दयारे-सुब्ह[3] में यूँही गुज़र नहीं होता

अज़ल[4] से कहते चले आ रहे हैं दीवाने
मगर फ़साना-ए-दिल मुख़्तसर नहीं होता

बग़ैर तेशा[5] पहाड़ों की राह मत चलिए
ज़बाँ का वार यहाँ कारगर नहीं होता

रहे-हयात में वो भी मुक़ाम आते हैं
तिरा ख़याल भी जब हमसफ़र नहीं होता

जिगर का ख़ून भी जब तक बहे न आँखों से
हज़ार रोए कोई ख़ुशनज़र नहीं होता

हो पुरअसर तो ख़मोशी भी है गराँ-माया[6]
अबस है नाला अगर बाअसर नहीं होता

बस एक बार मुहब्बत की बर्क़ गिरती है
ये हादसा कभी बारे-दिगर[7] नहीं होता

उसे हम अहले जुनूँ के सुपुर्द करते हैं
वो मा'रका[8] जो किसी से भी सर नहीं होता

जहाँ ठहर गये समझो 'हफ़ीज़' घर है वहीं
मुसाफ़िरों के मुक़द्दर में घर नहीं होता

1.उन्मत्त 2.स्थान 3.प्रभात नगर 4.अनादिकाल 5.बसोला 6.उत्कृष्ट 7.दूसरी बार 8.संग्राम

❀

मौत से भी कर्ब आगीं[1] इंतज़ार के लम्हे
कितने जान लेवा हैं हिज्रे-यार के लम्हे

फिर वही हुजूमे-ग़म[2], फिर वही ख़िज़ाँ और हम
क्या निशात[3] की घड़ियाँ क्या बहार के लम्हे

जब्र करने वालों से इतना अर्ज़ कर देना
मुस्तक़िल नहीं होते इख़्तियार के लम्हे

कुछ सुनाओ तुम अपनी कुछ सुनाएँ हम अपनी
काश फिर मयस्सर हों कुछ क़रार के लम्हे

हादसा हुआ ऐसा वो भी उड़ गये यारो
हमने जिनको समझा था ऐतबार के लम्हे

1.वेदना युक्त 2.दुख का समूह 3.आनन्द

किस जगह से गुज़र रहे हैं लोग
अपने साऐ से डर रहे हैं लोग

जी रहे हैं न मर रहे हैं लोग
गुज़र औक़ात कर रहे हैं लोग

खा रहे हैं फ़रेब साहिल का
मौत के घाट उतर रहे हैं लोग

कोई गुलशन का ख़ैर-ख़्वाह नहीं
फूल दामन में भर रहे हैं लोग

ख़ुदनुमाई[1] है और ख़ुदबीनी[2]
बन रहे हैं सँवर रहे हैं लोग

मयकदा मक़तले-तमन्ना[3] है
ख़ून से जाम भर रहे हैं लोग

मंज़िले-शौक़ अभी है दूर 'हफ़ीज़'
रास्तों से गुज़र रहे हैं लोग

1.आत्म प्रदर्शन 2.अहंकारी 3.अभिलाषा का वध स्थल

❀

ये और बात कि लहजा उदास रखते हैं
ख़िज़ाँ के गीत भी अपनी मिठास रखते हैं

उन्हें हयात की तोहमत[1] न दो अबस यारो
जो अपना जिस्म न अपना लिबास रखते हैं

क़रीबे-गुलबदनाँ[2] रह चुके हैं दीवाने
ये ख़ार[3] वो हैं जो फूलों की बास रखते हैं

ख़िरद[4] को मंज़िले-गुमगुश्ता[5] का पता दे दें
जुनूँज़दे अभी इतना हवास रखते हैं

कहाँ भिगोए कोई अपने ख़ुश्क होंटों को
ये दौर वो है कि दरिया भी प्यास रखते हैं

ख़ुदा का शुक्र अदा कीजे खुश नसीबी पर
'हफ़ीज़' आप दिले-ग़म-शनास[6] रखते हैं

1.दोषारोपण 2.फूलों से बदन वाले 3.काँटे 4.विवेक 5.लुप्त पड़ाव 6.दुख से परिचित हृदय

❁

तुम उन्हें रोकोगे कब तक ये तो अक्सर आएँगे
फल दरख़्तों में अगर होंगे तो पत्थर आएँगे

हम इसी उम्मीद की दहलीज़ पर बैठे रहे
क़ाफ़िले अहले-मुहब्बत के पलट कर आएँगे

प्यास सच्ची है मिरी तो इक न इक दिन साक़िया
ख़ुद मिरी जानिब तिरी आँखों के साग़र आएँगे

दिन का सारा वक़्त गुज़रा जुस्तजू-ए-रिज़्क़[1] में
शाम आई ताइरे-आवारा[2] अब घर आएँगे

दोस्तो तुम को किसी से क्यों करम की आस है
कुछ सितम गर आ चुके हैं कुछ सितमगर आएँगे

रात की बाँहों में कुछ देर और अमाँ पा लो 'हफ़ीज़'
दिन निकलते ही हज़ारों ग़म के लश्कर आएँगे

1.रोज़ी की खोज 2.आवारा पक्षी

❁

वक़्त से पहले ढल गया सूरज
हाए कितना बदल गया सूरज

क़द्र उसकी न हमने पहचानी
दूर हमसे निकल गया सूरज

उड़ गये तीरगी के होशो-हवास
चाल कुछ ऐसी चल गया सूरज

तब ये सुर्ख़ी लबों पे आई है
कितने तारे निगल गया सूरज

लड़खड़ाया ज़रूर था, लेकिन
कितनी जल्दी सँभल गया सूरज

शोला-ए-इश्क़ का असर देखो
मोम बन कर पिघल गया सूरज

किस का घर है सवादे-मग़रिब[1] में
क्यों उधर सर के बल गया सूरज

उसका ये काम तो न था पहले
मुँह पे क्यों ख़ाक मल गया सूरज

गिर गया शाम के समुंदर में
दूर उफ़क़[2] पर फिसल गया सूरज

मै 'हफ़ीज़' एक मुश्ते-ख़ाक[3] सही
मेरी शोहरत से जल गया सूरज

1.पश्चिम की कालिमा की ओर 2.क्षितिज 3.मुठ्ठी भर मिट्टी

बहर-जादा नुक़ूशे-ग़ैरफ़ानी[1] छोड़ आए हैं
मिरे पाए-जुनूँ[2] अपनी कहानी छोड़ आए हैं

पिलाए जा हमें ऐ दीदा-ए-जानाँ[3] पिलाए जा
तिरी ख़ातिर शराबे-अरग़वानी[4] छोड़ आए हैं

लहू की बूँद समझे तू कि लाले-बेबहा[5] समझे
तिरे दामन पे हम अपनी निशानी छोड़ आए हैं

न पूछो हम पे क्या गुज़रे है जब याद आए है उनकी
वो गलियाँ जिन में हम अपनी जवानी छोड़ आए हैं

ज़मीं को किस के जलवों ने कशिश इतनी अता की है
फ़रिश्ते क्यों फ़िज़ा-ए-आसमानी छोड़ आए हैं

हमारा ज़र्फ़ तो देखो कि हम हैं मालिके-दरिया
मगर दुश्मन की ख़ातिर सारा पानी छोड़ आए हैं

बड़े नादान हैं शहरे-तरब[6] में आ के रोयेंगे
जो अपना गाँव अपने घर की रानी छोड़ आए हैं

ये रोज़े-हश्र है हम बेनक़ाब आज उनको देखेंगे
इसी दिन के लिए दुनिया-ए-फ़ानी छोड़ आए हैं

किसी की बज़्म से वो बेखुदी[7] लेकर 'हफ़ीज़' उठे
बहुत पीछे जहाने-सरगिरानी[8] छोड़ आए हैं

1.हर पथ पर अनमिट चिन्ह 2.उन्माद के पद 3.प्राण नाथ की आँखें 4.एक प्रकार की शराब 5.अमुल्य मणिक 6.हर्षेत्पादक नगर 7.मस्ती 8.बहुमुल्य संसार

❁

जो समझ में नहीं आतीं वो सदाएँ तो हैं
घर में कोई नहीं मौजूद बलाएँ तो हैं

मुस्कुराते हुए हर ग़म से गुज़र जाऊँगा
तू मिरे साथ नही तेरी दुआएँ तो हैं

देखना ये है कहाँ उनका करम होता है
मयकदा सर पे लिए काली घटाएँ तो हैं

ज़िंदगी से कोई इस दर्जा भी मायूस न हो
हौसला बख़्श अभी इसकी अदाएँ तो हैं

दिल दुखेगा तो उसे ओढ़ के सो जाएँगे
हमको हासिल तिरी यादों की रिदाएँ[1] तो हैं

कौन है और जो आएगा हमारे दर तक
शोर करती हुई कुछ पगली हवाएँ तो हैं

ज़िंदगी जिनकी इनायत से सँवर जाती है
उन ख़ताओं में कुछ ऐसी भी ख़ताएँ तो हैं

अपने अजदाद[2] जिन्हें छोड़ गये हैं यारो
तन छुपाने को वो बोसीदा[3] क़बाएँ[4] तो हैं

वक़्त का कोई असर उस पे पड़ा हो तो कहो
बूढ़े बरगद की वही लम्बी जटाएँ तो हैं

क्या हुआ गर कोई हमदर्द नहीं है अपना
गोद फैलाए हुए ग़म की गुफाएँ तो हैं

हम ही दीवाने हैं करते नहीं कुछ फ़िक्र 'हफ़ीज़'
वर्ना हर दर्द की दुनिया में दवाएँ तो हैं

1.चादर 2.पूर्वज 3.फटा पुराना 4.कोट/अचकन

❁

कम नहीं अक़्लो-ख़िरद का, आगही[1] का ज़ायक़ा
और ही कुछ है मगर दीवानगी का ज़ायक़ा

सो गया मैं उन हसीं होंटों पे रख कर अपने होंट
ज़िंदगी ने आज चक्खा ज़िंदगी का ज़ायक़ा

वो कसाफ़त-आश्ना[2] है ये लताफ़त-आश्ना[3]
बंद पानी में कहाँ चंचल नदी का ज़ायक़ा

हूरो-ग़िल्माँ[4] की हिकायत है बहुत रंगीं, मगर
आदमी तो चाहता है आदमी का ज़ायक़ा

बरहमी-ए-हुस्न[5] से काफ़ी नवाज़ा आपने
अब इनायत हो ज़रा ख़ंदा-लबी[6] का ज़ायक़ा

जिस ने रस घोला था मेरे कानों में पहले पहल
ले रहा हूँ आज तक उस नग़मगी का ज़ायक़ा

मयकदे रंगीं हुए मेरे लहू से दोस्तो
है मेरी क़िस्मत में लेकिन तिश्नगी का ज़ायक़ा

आस्माँ की वुसअतों में ढूँढ़िए लुत्फ़े-ख़राम[7]
बादलों से पूछिए आवारगी का ज़ायक़ा

फिर कहाँ इस के बग़ैर उसको कहीं राहत 'हफ़ीज़'
चख लिया इक बार जिसने शाइरी का ज़ायक़ा

1.ज्ञान 2.मलिनता से परिचत 3.कोमलता से परिचित 4. अपसरा-स्वर्ग के अल्पायु सेवक 5.सौन्दर्य क्रुद्धता 6.प्रहसन ओष्ठ 7.विचरण आनन्द

❀

रूह लरज़ाँ[1] हो गई जिस्मों से कपड़े उड़ गये
ऐसी तूफ़ानी हवा थी होश सब के उड़ गये

शाख़ में जब तक समर थे पंछियों की भीड़ थी
शाख़ नंगी क्या हुई सारे परिंदे उड़ गये

हाथ मलते हैं कि अब कुछ भी नहीं है हाथ में
ज़िंदगी गुलरंग थी जिनसे वो लम्हे उड़ गये

अपने उजले पंख पर गर्दे-गुनह[2] पड़ने न दी
सूए-गर्दूं[3] रौशनी के सब फ़रिश्ते उड़ गये

आइने में आप के मद्दे-मुक़ाबिल कौन था
किस की सूरत देख कर हाथों के तोते उड़ गये

हमने जिन पर लिख रखी थी अपने दिल की दास्ताँ
वक़्त की आँधी में वो काग़ज़ के टुकड़े उड़ गये

जिनकी नज़रों में फ़िज़ा-ए-नील-गूँ[4] का हुस्न था
तोड़ कर क़ैदे-तअल्लुक़ वो परिंदे उड़ गये

वो महल भी जो पहाड़ों की तरह मज़बूत थे
हादसा ऐसा हुआ उनके परख़चे उड़ गये

उनसे अब दीवारे-दिल को क्या सजाएँ हम 'हफ़ीज़'
वो तसावीरे-कुहन[5] सब रंग जिनके उड़ गये

1.प्रकंपित 2.पाप की धूल 3.आकाश की ओर 4.नीलरंजित वातावरण 5.पुरानी तस्वीरें

ज़हर उगला करें ये ज़हर उगलने वाले
हम नहीं तर्ज़े-सुख़न[1] अपनी बदलने वाले

रास क्या आएगी साहिल की ख़मोशी उनको
हैं जो तूफ़ान की आग़ोश में पलने वाले

तू किसी रंग में आ हम तुझे पहचान गये
हर घड़ी एक नया रंग बदलने वाले

हम तो काँटों को भी सीने से लगा लेते हैं
लोग कैसे हैं गुले-तर को मसलने वाले

दरबदर आज वही आबला-पा[2] फिरते हैं
घर से बाहर न थे जो लोग निकलने वाले

मेरे होंटों से यूँही बरसेंगे नग़मात के फूल
रश्क की आग में जलते रहें जलने वाले

लग़्ज़िशें भी यहाँ किरदार बना देती हैं
लग़्ज़िशों से भी सँभलते हैं सँभलने वाले

कौन मयख़ाने की दीवार पे लिख आया है
'तिश्ना-काम[3] अब नहीं वादों से बहलने वाले'

दश्ते-पुरख़ार[4] में हमराह नहीं है कोई
वादी-ए-गुल में बहुत साथ थे चलने वाले

1.कथन शैली 2.छाले पड़े पाँव 3.प्यासे 4.काँटों भरा वन

❁

तिरे जलवों की अरज़ानी[1] नहीं है
अब आईनों को हैरानी नहीं है

ख़ुदा आबाद रक्खे मेरे घर को
कहीं भी ऐसी वीरानी नहीं है

जुनूँ है नाम इक मौजे-रवाँ[2] का
जुनूँ ठहरा हुआ पानी नहीं है

तमन्ना है उसी को देखने की
जो सूरत जानी पहचानी नहीं है

अब आजाओ मिरे दिल में बिला ख़ौफ़
अब इस दरिया में तुग़्यानी[3] नहीं है

हम उससे क्या बचाएँ नक़्दे-जाँ को
कहाँ वो दुश्मने-जानी नहीं है

किसी बादल से क्या उम्मीद रखिए
समंदर में भी जब पानी नहीं है

इसे आहो-बुका से दूर रखिए
ग़ज़ल है मर्सिया-ख़्वानी नहीं है

हमें मालूम है अपनी हक़ीक़त
हमें नाज़े-हमःदानी[4] नहीं है

1.सस्तापन 2.गलिशील तरंग 3.प्लावन 4.हर काम के ज्ञान का अभिमान

❀

जब भी तिरी यादों की चलने लगी पुरवाई
हर ज़ख़्म हुआ ताज़ा हर चोट उभर आई

इस बात पे हैराँ हैं साहिल के तमाशाई
इक टूटी हुई कश्ती हर मौज से टकराई

मयख़ाने तक आ पहुँची इंसाफ़ की रुस्वाई
साक़ी से हुई लग़्ज़िश रिंदों[1] ने सज़ा पाई

हंगामा हुआ बरपा, इक जाम अगर टूटा
दिल टूट गये लाखों आवाज़ नहीं आई

इक रात बसर कर लें आराम से दीवाने
ऐसा भी कोई वादा ऐ जाने-शकेबाई[2]

किस दर्जा सितमगर है ये गर्दिशे-दौराँ भी
ख़ुद आज तमाशा हैं कल थे जो तमाशाई

क्या जानिए क्या ग़म था, मिल कर भी ये आलम था
बेख़्वाब रहे वो भी हमको भी न नींद आई

1.मद्यप 2. संतोष का प्राण

❀

शक्ले-हस्ती है बेजान तस्वीर सी
डाल दी ग़म ने पैरों में ज़ंजीर सी

किस तरह पार उतरता है देखें कोई
उम्र कच्चा घड़ा, ज़िंदगी हीर सी

इक कहानी की शायद ये तम्हीद[1] है
मैं भी चुपचाप-सा, तू भी गंभीर सी

नर्मो-नाज़ुक थी जो शाख़े-गुल की तरह
खिंच गई तो हुई एक शमशीर सी

इक सितम-पेशा[2] है मायले-इल्तेफ़ात[3]
देखता हूँ दुआओं में तासीर[4] सी

ख़म-ब-ख़म[5] है मगर पुरकशिश[6] है बहुत
ज़िंदगी भी है ज़ुल्फ़े-गिरहगीर[7] सी

किसने आवाज़ दी आख़िरे-शब मुझे[8]
ज़ुल्मतों में नज़र आई तंवीर[9] सी

1.भूमिका 2.अत्याचारी 3.कृपा आकृष्ट 4.प्रभाव 5.वक्र 6. आकर्षक 7.बलखाए हुए केश 8.रात्रि अंत 9. आलोक

❀

उसे पास से हम ने देखा नहीं था
वो दरिया का धोका था दरिया नहीं था

अब आईने भी सच कहाँ बोलते हैं
ज़माना कभी इतना झूटा नहीं था

उसे छोड़ना ही पड़ा हम को इक दिन
किराए का घर था वो अपना नहीं था

कहाँ सर छुपाते कड़ी धूप में हम
कहीं रेगज़ारों[1] में साया नहीं था

मुझे कोई पहचानता भी तो कैसे
मिरे जिस्म पर मेरा चेहरा नहीं था

हर इक आँख में ख़ौफ़ की बर्छियाँ थीं
किसी को किसी पर भरोसा नहीं था

वो अब दर्से-तहज़ीब[2] देता है हमको
जिसे गुफ़्तगू का सलीक़ा नहीं था

किसे हम 'हफ़ीज़' अपना क़ातिल बताते
सब अपने थे कोई पराया नहीं था

1.मरुस्थलों 2. सभ्यता का पाठ

सफ़ीने का जो नाख़ुदा[1] बन गया है
ख़ुदा की तरह बात करने लगा है

धुआँ उठ रहा है मिरे आशियाँ से
ज़माना समझता है काली घटा है

फ़रोज़ाँ[2] हुआ है चराग़े-तमन्ना
लहू दिल का जब आँसुओं में ढला है

घड़ी है यही दिन के ढलने की शायद
मिरा साया मुझसे बड़ा हो गया है

कोई पी के बहके, कोई सिर्फ़ तरसे
यही मयकदा है तो क्या मयकदा है

बहारों का मतलब 'हफ़ीज़' उससे पूछो
बहारों में जिसका नशेमन जला है

1.कर्णधार 2.प्रकाशमान

❁

रोज़ उभरते रहे रोज़ ढलते रहे
हम भी सूरज की मानिंद जलते रहे

इस तरफ़ प्यास से होंट जलते रहे
उस तरफ़ जाम पर जाम चलते रहे

बाग़बाँ सिर्फ़ आँसू बहाता रहा
आशियाने बहारों में जलते रहे

शम'अ की तरह हमने भी काटी है रात
क़तरा-क़तरा सहर तक पिघलते रहे

वो तो बैठे रहे सर झुकाए हुए
जादू उनकी निगाहों के चलते रहे

मुश्किलों ने बहुत राह रोकी, मगर
जिनको मंज़िल की धुन थी वो चलते रहे

हम तो क़ायम रहे अपनी हर बात पर
तुम बरंगे-ज़माना बदलते रहे

याद के जुगनुओं से वो आलम रहा
दीप बुझते रहे दीप जलते रहे

हमने दामन न अपना भिगोया 'हफ़ीज़'
दिल में तूफ़ान लाखों मचलते रहे

रेत के मंज़र आँखों में भर जाएँगे
जितने दरिया चढ़े हैं उतर जाएँगे

सरहदे-जिस्मो-जाँ से गुज़र जाएँगे
हम ख़लाओं में इक दिन बिखर जाएँगे

वो तो वादा करेंगे मुकर जाएँगे
उनके दीवाने बेमौत मर जाएँगे

ज़िंदगी आग का एक दरिया सही
जिनको जाना है वो तैर कर जाएँगे

याद आएगी साक़ी तिरी बेरुख़ी
तिश्नगी के ये दिन तो गुज़र जाएँगे

दिलनशीं हैं बहुत ख़्वाबों के सिलसिले
दिन निकलने तो दो सब बिखर जाएँगे

बादलों से बहुत आस रखते हैं जो
ज़हरे-तिश्ना-लबी पी के मर जाएँगे

दर्द की धूप में और तपने तो दो
हम भी कुंदन की सूरत निखर जाएँगे

जानते हैं जो ख़ारा-तराशी 'हफ़ीज़'
पत्थरों में भी रह कर सँवर जाएँगे

❁

क़ुर्बतों[1] की शराब देता जा
ख़ुश्क पौधों को आब[2] देता जा

मुझसे मिल कर तू मेरी रातों को
अंजुमो-माहताब देता जा

मैं किसे देखकर जियूँगा अब
जाने वाले जवाब देता जा

तू जो कुछ और दे नहीं सकता
चंद रंगीन ख़्वाब देता जा

इंक़लाब आए या न आए मगर
मुज़्द-ए-इंक़लाब[3] देता जा

मुझको पागल पुकारने वाले
और भी कुछ ख़िताब देता जा

रहज़ने-वक़्त इक करम फ़रमा
मुझको मेरा शबाब देता जा

शामे-ग़म में जो काम आए 'हफ़ीज़'
कोई ऐसी किताब देता जा

1.निकटता 2.जल 3.क्रान्ति की मंगल सूचना

❁

दिल की आवाज़ में आवाज़ मिलाते रहिए
जागते रहिए ज़माने को जगाते रहिए

दौलते-इश्क़ नहीं बाँध के रखने के लिए
इस ख़ज़ाने को जहाँ तक हो लुटाते रहिए

ज़िंदगी भी किसी महबूब से कुछ कम तो नहीं
प्यार है इससे तो फिर नाज़ उठाते रहिए

ख़ूने-दिल सर्फ़[1] हो, या ख़ूने-रगे-जाँ यारो
घोर अँधेरा है चराग़ों को जलाते रहिए

ज़िंदगी दर्द की तस्वीर न बनने पाए
बोलते रहिए ज़रा हँसते हँसाते रहिए

रूठना भी है हसीनों की अदा में शामिल
आप का काम मनाना है मनाते रहिए

बेवफ़ाई का ज़माना है मगर आप 'हफ़ीज़'
नग़मा-ए-महरो-वफ़ा[2] सबको सुनाते रहिए

1.व्यय 2.दया और निर्वाह का संगीत

कभी शाख़े-गुले-नाज़ुक, कभी तलवार लगे
ज़िंदगी तू भी कोई यारे-तरहदार[1] लगे

जो शिनावर[2] थे उन्हें मौजे-बला ले डूबी
तैरना जिनको न आता था वही पार लगे

वो जो सदियों से असीरे-ग़मे-बेख़्वाबी[3] हैं
हाथ उनके भी कोई दौलते-बेदार लगे

जिसका हर लम्हा गुल-अफ़्शाँ[4] था बहारों की तरह
तुम नहीं हो तो वही ज़ीस्त इक आज़ार[5] लगे

ज़िंदगी कौन सी वादी में हमें ले आई
जिसको देखो वो यहाँ सदियों का बीमार लगे

बीच मंझधार में क्यों दिल का सफ़ीना[6] ठहरे
चाहे इस पार लगे चाहे ये उस पार लगे

आप क़ातिल हैं तो फिर कोई सलामत क्यों हो
हाँ लगे और अभी कुश्तों[7] का अंबार लगे

शाम आएगी तो देखेंगे अक़ीदत[8] सबकी
चढ़ते सूरज का तो हर शख़्स परस्तार लगे

आप भी जानें ज़रा चोट किसे कहते हैं
आप के सर भी कोई संगे-गिराँ-बार[9] लगे

किसके साए में अमाँ ढूँढ़ें कहाँ बैठें 'हफ़ीज़'
हर अक़ीदा[10] हमें गिरती हुई दीवार लगे

1.बाँका 2.तैरने वाले 3.नींद न आने के ग़म का बंदी 4. फूल बिखेरने वाला 5. दुख 6.नौका 7.बधितों 8.श्रद्धा 9.भारी पत्थर 10.आस्था

तस्वीर का इक रंगे-दिगर याद करे है
आईना हमें देख के फ़रियाद करे है

किस तरह लुटा दिल का नगर याद करे है
दीवाना तिरी पहली नज़र याद करे है

दिल यूँ तुझे हर शामो-सहर याद करे है
परदेस में जैसे कोई घर याद करे है

मिलता नहीं क्या कोई सज़ावारे-जफ़ा[1] और
हर संगे-सितम क्यों मिरा सर याद करे है

फिर मेरी तरह कोई मुसाफ़िर नहीं गुज़रा
हर जादा मिरी तर्ज़े-सफ़र याद करे है

दिल भूल गया शौक़ से ग़ैरों की जफ़ाएँ
अपनों की इनायात मगर याद करे है

मायल-ब-करम होती हैं जब हुस्न की नज़रें
तब कोई मुहब्बत का हुनर याद करे है

शर्मिंदा है क़ातिल की नज़र किस लिए मुझसे
शायद वो मिरा ख़ूने-जिगर याद करे है

मुजरिम है 'हफ़ीज़' इसलिए कुछ लोगों के आगे
बुतख़ाने में अल्लाह का घर याद करे है

1.अत्याचार के योग्य

❁

तग़ाफ़ुल[1] को तर्ज़े-करम[2] जानते हैं
तुम्हारी अदाओं को हम जानते हैं

फ़रेबे-बहाराँ[3] न दो हमको यारो
कि हम इसका सारा भरम जानते हैं

चले जा रहे हैं मगर अपनी मंज़िल
न तुम जानते हो न हम जानते हैं

मिरे हम-प्याला रहे हैं वो बर्सों
मुझे वाइज़े-मोहतरम जानते हैं

मसर्रत उन्हीं के क़दम चूमती है
जो दश्ते-बला[4] को इरम[5] जानते हैं

वही उक़्दा-ए-ज़िंदगी[6] हल करेंगे
तिरे गेसुओं के जो ख़म[7] जानते हैं

बहुत जानना भी है वजहे-ख़राबी
वो अच्छे हैं जो लोग कम जानते हैं

1.उपेक्षा 2.कृपा शैली 3.वसंत का छल 4.विपत्ति का वन 5. स्वर्ग 6. जीवन रहस्य 7. बल

❁

तेज़ जब ख़ंजरे-बेदाद[1] किया जाएगा
हम ग़रीबों का गला याद किया जाएगा

ग़ैर को ख़ुश हमें नाशाद किया जाएगा
कब तलक ये सितम ईजाद किया जाएगा

ये तो बतलाओ हमें शहर बसाने वालो
दिल का वीराना कब आबाद किया जाएगा

और क्या होगा तिरे अहदे-सितम में ऐ दोस्त
रोज़ ताज़ा सितम ईजाद किया जाएगा

ये जहाँ मुर्दा परस्तों का जहाँ है यारो
हम न होंगे तो हमें याद किया जाएगा

दस्तो-बाज़ू से भी कुछ काम लिया जाए 'हफ़ीज़'
ता-ब-के[2] शिकवा-ए-सय्याद किया जाएगा

1.न्याय का कटार 2.कब तक

❁

यूँ तिरे गेसू कभी बरहम न थे
राहे-जाँ मे इतने पेचो-ख़म न थे

आप के लुत्फ़ो-करम तो कम न थे
ज़ख़्मे-दिल ही लाइक़े-मरहम न थे

ये इशारे पहले भी कुछ कम न थे
लेकिन अंदाज़ इस क़दर मुबहम[1] न थे

सोचिए उस वक़्त के बारे में जब
जन्नतें थीं हज़रते-आदम न थे

था कहाँ ये ऐतबारे-अंजुमन
जब तुम्हारी अंजुमन में हम न थे

वक़्त की आँधी भी थी कुछ तेज़ तर
कुछ दरख़्ते-जाँ भी मुस्तहकम[2] न थे

क्या हुआ यारो, जो वो भी रो पड़े
हुस्न वाले तो बचश्मे-नम[3] न थे

ज़िंदगी थी नाशनासे[4]-ज़िंदगी
हम जब अपने आप से महरम[5] न थे

और था कोई हमारे सामने
आइने में क़द्दे-आदम[6] हम न थे

था हमारे साथ तू भी हर जगह
ऐ ख़ुदा तन्हा कहीं भी हम न थे

1. अस्पष्ट 2.स्थिर 3.भीगी आँख 4.अपरिचत 5. परिचित 6.दीर्घकाय

❀

तू भी रुस्वा है, मिरा दिल भी है बदनाम अभी
है मिरे सर पर तिरे इश्क़ का इल्ज़ाम अभी

और मुहतात[1] ज़रा सुब्हे-बहाराँ के सफ़ीर[2]
है त'आक़ुब[3] में तिरे क़ाफ़िला-ए-शाम अभी

कितने मयकश हैं जो पीते हैं अभी ख़ूने-जिगर
साक़िया मुझको न दे साग़रे-गुलफ़ाम अभी

फ़हमो-इदराक[4] से बाला[5] हैं बहुत सी बातें
इक मुअम्मा है हदीसे-सहरो-शाम[6] अभी

मुझसे मत पूछ मैं इस दौर में क्या क्या भूला
बस ग़नीमत है कि लेता हूँ तिरा नाम अभी

घर के अंदर है वही तीराशबी का आलम
सिर्फ़ रौशन हैं मकानों के दरो-बाम[7] अभी

हमने जिसके लिए हर ज़ख़्म सहे हैं हँसकर
कितनी दूर और है वो मंज़िले-आराम अभी

1.सावधान 2.दूत 3. पीछा करना 4.विवेक 5.ऊपर 6.सुब्ह और शाम की बातें 7.द्वारा कोठा

❁

आवारा मिज़ाजी का इल्ज़ाम नहीं लेंगे
हम छाँव में ज़ुल्फ़ों की आराम नहीं लेंगे

हो दिल का लहू जिसमें वो जाम नहीं लेंगे
इनआम यही है तो इनआम नहीं लेंगे

क़ातिल के घराने से उनका भी तअल्लुक़ है
खुल कर कभी क़ातिल का वो नाम नहीं लेंगे

या सबको पिला साक़ी, या हम को भी प्यासा रख
तन्हा तिरे हाथों से हम जाम नहीं लेंगे

सय्याद[1] का मंसूबा हम ख़ूब समझते हैं
दाने की तमन्ना में हम दाम[2] नहीं लेंगे

रोएँगे 'हफ़ीज़' अपनी महरूमी-ए-क़िस्मत पर
अब क़ुव्वते-बाज़ू से जो काम नहीं लेंगे

1.आखेटक 2.जाल

❀

जो ख़त[1] है शिकस्ता[2] है जो अक्स[3] है टूटा है
या हुस्न तिरा झूटा, या आइना झूटा है

हम शुक्र करें किसका, शाकी[4] हों तो किसके हों
रहज़न[5] ने भी लूटा है, रहबर ने भी लूटा है

याद आया उन आँखों का पैमाने-वफ़ा[6] जब भी
साग़र[7] मिरे हाथों से बेसाख़्ता छूटा है

हर चेहरे पे लिक्खा है इक क़िस्सा-ए-मज़लूमी
बे-दर्द ज़माने ने हर शख़्स को लूटा है

मंज़िल की तमन्ना में सरगर्म-ए-सफ़र[8] हैं सब
कौन उसके लिए रोए जो राह में छूटा है

अल्लाह रे 'हफ़ीज़' उसका ये ज़ौक़े-ख़ुद-आराई[9]
जब ज़ुल्फ़ सँवारी है इक आइना टूटा है

1.चिन्ह 2. खण्डित 3. प्रतिबिम्ब 4. मद्य पात्र 5.बटमार 6.निर्वाह पण 7.मद्य पात्र 8.यात्रा में तल्लीन 9.स्वयं सज्जा की प्रवृत्ति

❀

जो खो गई वो कहानी तलाश करते हैं
हम अपना अहदे-जवानी तलाश करते हैं

जफ़ा के दौर में जो ढूँढ़ते हैं नक़्शे-वफ़ा
वो रेगज़ार में पानी तलाश करते हैं

अजीब दौर है फ़रमाँरवा-ए-दरिया[1] भी
इलाजे-तश्ना-दहानी[2] तलाश करते हैं

सुख़न के ताजमहल ले के आए हैं हम भी
निगाहे-शाह जहानी तलाश करते हैं

उन्हें दिखाओ हमारे जिगर के ज़ख़्मों को
जो फ़स्ले-गुल के म'आनी तलाश करते हैं

बहुत तलाश किया कोई मेहरबाँ न मिला
अब एक दुश्मने-जानी तलाश करते हैं

कुरेदते हैं दिले-सोख़्ता[3] की राख 'हफ़ीज़'
किसी के ग़म की निशानी तलाश करते हैं

1.दरिया के शासक 2.प्यास का उपचार 3.दग्ध हृदय/दिलजला

दिलों को तोड़ के जामे-शराब ढाले हैं
ये अहदे-नौ[1] के मसीहा भी क्या निराले हैं

मैं इनसे कोई उम्मीदे-वफ़ा नहीं रखता
ये जितने लोग हैं सब मेरे देखे भाले हैं

ग़ुरूरे-हुस्न को शायद ख़बर नहीं इसकी
हम अहले-दिल[2] भी बड़ी आन बान वाले हैं

वहीं वहीं तो चराग़े-हयात[3] हैं रौशन
जहाँ जहाँ तिरे मस्तों ने जाम उछाले हैं

अभी से किसलिए कश्ती में हश्र[4] बर्पा है
अभी तो कितने ही तूफ़ान आने वाले हैं

कहाँ कहाँ वो मिटाएँगे उसका नामे-हसीं
हर इक किताब में जिस शख़्स के हवाले[5] हैं

जहाने-ताज़ा[6] के नक़्शो-निगार[7] क्या कहिए
बहुत हसीं हैं मगर मकड़ियों के जाले हैं

कोई नहीं है जिसे पाकबाज़[8] कहिए 'हफ़ीज़'
हवस के नाग हर इक आस्तीं ने पाले हैं

1.नवयुग 2.दिल वाले 3.जीवन दीप 4.प्रलय 5.उल्लेख 6. नीवन युग 7.चित्र 8.पवित्र आचार वाला

❁

जोशे-जुनूँ[1] में आबलापाई है ज़िंदगी
अहले-ख़िरद[2] के हाथ कब आई है ज़िंदगी

दौड़े है काटने के लिए अपना साया भी
किस दश्ते-बेपनाह[3] में लाई है ज़िंदगी

कुछ इंबिसाते-वस्ल[4] भी कह लीजिए, मगर
सच पूछिए तो दर्दे-जुदाई है ज़िंदगी

तब उनकी बज़्मे-नाज़[5] के क़ाबिल हुए हैं हम
बर्सों बरंगे-शम'अ[6] जलाई है ज़िंदगी

शर्म आ रही है का'बे को जाते हुए 'हफ़ीज़'
हमने सनमकदों में गँवाई है ज़िंदगी

1.उल्लास उन्माद 2.विवेक वाले 3.अपार वन 4.मिलन की प्रसन्नता 5.गौरवशाली सभा 6.दीपक के रंग में

❀

खिलाओ फूल बिखेरो हँसी जिधर जाओ
चमन से मिस्ले-नसीमे-सहर[1] गुज़र जाओ

न मिल सकेगा जहाँ में मिरी नज़र का बदल
सँवर सको तो इस आईने में सँवर जाओ

हर इक मुक़ाम है मौजे-बला के नर्ग़े[2] में
कहाँ पनाह लो जाओ तो किस के घर जाओ

अजीब हाल है हर सुब्ह लो जनम फिर से
जब आए शाम तो कमरे में अपने मर जाओ

सरे-नियाज़[3] झुकाओ, गुज़ारो सज्दा-ए-शौक़[4]
जहाँ वो नक़्शे-कफ़े-पा[5] मिले ठहर जाओ

तुम्हारे नाम से मंसूब[6] मंज़िलें होंगी
ग़ुबार बन के रहे-शौक़[7] में बिखर जाओ

बहुत क़लील[8] है ये फ़ुर्सते-हयात[9] 'हफ़ीज़'
जो कर सको तो कोई नेक काम कर जाओ

1.प्रातः समीर 2.घेरा 3.विनम्र सर 4.अभिलाषा पंचांग 5.पादतल चिन्ह 6.समर्पित 7.इच्छा पथ 8.अल्प 9.जीवन अवकाश

❀

वफ़ूरे-शौक़[1] में हाथों से गिर कर टूट जाते हैं
लबों तक आते-आते कितने साग़र टूट जाते हैं

वहाँ परवाज़ करते हैं बफ़ैज़े-इश्क़[2] दीवाने
जहाँ अक़्ले-फ़लक-पैमा[3] के शहपर[4] टूट जाते हैं

तसादुम[5] जब भी होता है किसी संगीं हक़ीक़त से
ख़यालो-ख़्वाब के रंगीन पैकर टूट जाते हैं

सफ़ीने शौक़[6] के बह जाते हैं जज़्बात की रौ में
तलातुम-ख़ेज़[7] हो दरिया तो लंगर टूट जाते हैं

बयाँ हो ही नहीं सकती, ख़लिश[8] होती है कुछ ऐसी
दिलों में चुभ के उन आँखों के निश्तर[9] टूट जाते हैं

हमारा दिल तो फिर दिल था, अगर टूटा तो क्या टूटा
मुसलसल चोट पड़ती है तो पत्थर टूट जाते हैं

1.बाहुल्य इच्छा 2.प्रेम दान 3.आकाश मापक बुद्धि 4 पंछल के बाछ का बड़ा पर 5.संघर्ष 6.इच्छा नौका 7.आवेग से भरा 8.वेदना 9.छूरी

जल्वा-ए-रक़्से-शरर है ज़िंदगी
हाए कितनी मुख़्तसर है ज़िंदगी

कौन सी मंज़िल की है उसको तलाश
किस लिए गर्म-ए-सफ़र[1] है ज़िंदगी

बेचराग़े- इश्क़ो - बेनूरे - यक़ीं[2]
एक शामे-बेसहर[3] है ज़िंदगी

फिर रही है दरबदर कासा बकफ़[4]
क्या कोई दरयूज़ागर[5] है ज़िंदगी

आ कि तुझ बिन बेमज़ा हैं रोज़ो-शब
आ कि तुझ बिन दर्दे-सर है ज़िंदगी

जाए-इबरत[6] है जहाने-आबो-गिल[7]
आलमे-फ़िक्रो-नज़र है ज़िंदगी

है किसी के हुस्न की आईनादार[8]
या ख़ुद इक आईना-गर[9] है ज़िंदगी

अपने काँधे पर लिये सदियों का बोझ
ज़िंदगी की नौहागर[10] है ज़िंदगी

हर नफ़स[11] है इक नया दामे-फ़रेब[12]
इम्तिहाने-बालो-पर[13] है ज़िंदगी

1.यात्रा में लीन 2.बिना प्रेम और विश्वास का दीप 3.ऐसी शाम जिसकी सुब्ह न हो 4.भिक्षापात्र लिए 5.भिक्षु 6.उपदेश का स्थान 7.पानी और मिट्टी की दुनिया 8.दर्पण धार 9.दर्पण करने वाला 10.विलाप करने वाला 11.क्षण 12. छल का जाल 13. उड़ने की शक्ति

❀

हर एक शब है शबे-इंतज़ार की सूरत
ज़माना हो गया देखे क़रार की सूरत

न कोई गुल मुतबस्सिम[1] न कोई शाख़ हरी
खिज़ाँ से मिलती है फ़स्ले-बहार की सूरत

वो जिनको रहबरे-राहे-हयात[2] होना था
भटक रहे हैं वो गर्दो-ग़ुबार की सूरत

जो तुंदो-तेज़ हवाओं के रुख़ पलटते थे
वो जी रहे हैं चराग़े-मज़ार की सूरत

न कोई महफ़िले-मातम न कोई जश्ने-तरब[3]
है शहरे-दिल अब इक उजड़े दयार की सूरत

ग़मे-हयात शिकारी की तरह पीछे है
ज़माना भाग रहा है शिकार की सूरत

ख़यालो-ख़्वाब की शम'अएँ भी हो गयीं बेनूर
फ़ज़ाएँ ज़ेहन है तारीक ग़ार[4] की सूरत

ग़मो-अलम की शिकायत बजा 'हफ़ीज़' मगर
ग़मो-अलम से कहाँ है फ़रार की सूरत

1.हर्षित 2.जीवनपथ का मार्गदर्शक 3.इच्छा का उत्सव 4.गुफा

❀

तेरा हुस्ने-दिलनशीं हो लाख पर्दा आश्ना
देख ही लेते हैं तुझको तेरे जलवा आश्ना

सब तलबगारे-सुकूँ हैं सब कनारा आश्ना
कोई कश्ती में नहीं मौजे-बला का आश्ना

बस्तियों को छोड़ कर जंगल में क्यों जाते हैं लोग
क्यों चमन वाले हुए जाते हैं सहरा आश्ना

कुछ अजब है दिल का आलम कुछ अजब है दिल का हाल
गाह दुनिया से ख़फ़ा है गाह दुनिया आश्ना

तेरी आँखों से मिले जिसको अयाग़ो-ज़िंदगी
क्यों वो पैमाना तलब हो क्यो हो सहबा आश्ना

ऐ निगाहे-दोस्त सब तेरी करम फ़रमाई है
वर्ना कब थे तेरे दीवाने तमन्ना आश्ना

अजनबी था वो मगर उससे मिले तो यूँ लगा
मुद्दतों से ज़िंदगी थी उससे गोया आश्ना

कुछ किसी के आस्ताँ को भी सँवरना था 'हफ़ीज़'
कुछ हमारे सर को भी होना था सज्दा आश्ना

❁

सब हैं महबूबे-कज-अदा[1] की तरह
कौन मिलता है आश्ना की तरह

क्या सिखाएँगे बंदगी के उसूल
बात करते हैं जो ख़ुदा की तरह

कौन गुज़रा मिरे बराबर से
बूए-गुल[2], मौज-अ-ए-सबा[3] की तरह

हर तरफ़ ख़ामुशी थी मरघट की
हम भी जलते रहे चिता की तरह

क्या सुनाएँ फ़साना-ए-हस्ती
कट गई उम्र इक सज़ा की तरह

रौंद डाला ग़मों के लश्कर ने
मिट गये लोग नक़्शे-पा[4] की तरह

जितना पीसा गया 'हफ़ीज़' हमें
रंग ले आए हम हिना की तरह

1.कुटिल स्वभाव वाला 2.फूल की ख़ुशबू 3.प्रातः पवन का तरंग4. पद्‌चिन्ह

❀

निगाहे-शौक़ पे क्यों है तिरा इताब[1] बहुत
ख़ता मुआ'फ़ कि तू ख़ुद है बेहिजाब बहुत

सियाहियों के समंदर में गिर के डूब गये
मिरी नज़र ने उछाले थे माहताब बहुत

ज़माने वाले समाअत की ताब ला न सके
जिगर-ख़राश[2] था आहंगे-इंक़लाब[3] बहुत

सुकूँ कहाँ अभी दस्ते-जुनूँ की क़िस्मत में
अभी तो चेहरा-ए-फ़ितरत[4] पे हैं नक़ाब बहुत

हक़ीक़तों की कड़ी धूप ले उड़ी सबको
निगाहो-दिल में बसाए थे हमने ख़्वाब बहुत

शऊरे-बादाकशी[5] ही न था 'हफ़ीज़' हमें
भरी थी वर्ना रगे-ताक में शराब बहुत

1.प्रकोप 2.शोकपूर्ण 3.क्रान्ति की शैली 4स्वभाव के मुख पर 5.मदिरापान का विवेक

❀

हुस्ने-ख़यालो-दिलकशी-ए-ख़्वाब ले गया
ख़ुर्शीदे-सुब्ह[1] चादरे-महताब[2] ले गया

किसका ख़याल था जो मुझे मस्त कर गया
हाथों से कौन जामे-मयनाब[3] ले गया

अब दिल में कोई शौक़ न ग़म है न आरज़ू
इक राहज़न हमारे सब अस्बाब[4] ले गया

काँटे ही काँटे रह गये हद्दे-निगाह तक
गुलचीने-वक़्त[5] हर गुले-शादाब ले गया

मजबूर पा के हमको ख़रीदारे-कमनज़र
कौड़ी के मोल गौहरे-नायाब[6] ले गया

क्या ढूँढ़ते हो नामो-निशाँ ज़ीस्त का 'हफ़ीज़'
जो कुछ हमारे घर में था सैलाब ले गया

1.प्रातः सूर्य 2.चन्द्रमा की चादर 3.विशुद्ध शराब का प्याला 4.सामग्री 5.समय का माली 6.दुर्लभ मोती

❁

हर सम्त दिलफ़रेब[1] नज़ारों का जाल था
ज़िन्दाने-आरज़ू[2] से निकलना मुहाल था

इतना हसीं किसी का तिलिस्मे-ख़याल[3] था
फ़ुर्क़त[4] के रोज़ो-शब में भी रंगे-विसाल[5] था

कुछ सुस्त रौ थे हम भी जो राहों में रह गये
कुछ तेज़तर भी क़ाफ़िला-ए-माहो-साल था

सूरज की तरह ढल गया मेरा वजूद भी
पिंहाँ[6] मिरे कमाल में मेरा ज़वाल था

हम घूम फिर के आ गये अपने दयार में
जिस शहर में गये वहाँ क़हतुर्रिजाल[7] था

1.मनमोहक 2.इच्छा कारागार 3.कल्पना का माया 4.विरह 5.मिलन का रंग 6.निहित 7.योग्य मनुष्य की कमी

❀

अहदे-वफ़ा[1] किया है तिरे नक़्शे-पा के साथ
सम्ते-सफ़र[2] बदलते नहीं हम हवा के साथ

साहिल[3] का ये जुमूद[4] गवारा नहीं हमें
हम रक़्स करते आए हैं मौजे-बला के साथ

शादी व ग़म बहम थे गुलिस्ताने-शौक़ में
चलती रही सुमूम[5] भी बादे-सबा[6] के साथ

खुल जाए हम पे उक़्दा[7] हयातो-ममात[8] का
आ जाओ तुम भी काश पयामे-क़ज़ा[9] के साथ

मुमकिन नहीं कि वा न हो बाबे-असर 'हफ़ीज़'
उट्ठे सदा-ए-दिल भी जो दस्ते-दुआ के साथ

1.निर्वाह की प्रतिज्ञा 2.यात्रा की दिशा 3. तट 4 गतिरोध 5.ताप हरी 6.शीतलहरी 7.समाधान 8.जीवन मृत्यु
9. मृत्यु संदेश

❁

निशाने-ज़ीस्त सराबों[1] में देख लेते हैं
कभी कभी उसे ख़्वाबों में देख लेते हैं

तुम्हारा तज़किरा सुन लेते हैं सितारों से
तुम्हारा हुस्न गुलाबों में देख लेते हैं

जो आश्ना हैं तुम्हारी अदाओं से ऐ दोस्त
तुम्हें हज़ार हिजाबों में देख लेते हैं

सितम में ढूँढ़ लिया करते हैं अदा-ए-करम
इनायतें भी अताबों में देख लेते हैं

वफ़ा नज़र नहीं आती कहीं ज़माने में
वफ़ा का ज़िक्र किताबों में देख लेते हैं

1.रेत

किताब मिलने का पता

1. डॉ.अख्तर मसूद,
डी- 43/116, बाज़ार सदानंद,
मदनपुरा, वाराणसी 221001 यू.पी.
मोबाइल 9235890173

2. डॉ.अब्दुल क़ादिर
बी-28/5 ए, सनशाइन अपार्टमेंट,
ठोकर नं. 7, शाहीन बाग़, जामिया नगर,
नई दिल्ली- 110025
मोबाइल 9891025825